कोटद्वार, मंगलवार
13 अगस्त 2024
वर्ष: 46
अंक: 108 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

युवक की बाइक की टक्कर से मौत

देहरादून। निरंजनपुर में सब्जी मंडी के पास पैदल जा रहे युवक की बाइक की टक्कर से मौत हो गई। हादसे के बाइक सवार मौके से फरार हो गया। सोमवार को मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराया गया। इसके बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया। पुलिस मुकदमा दर्ज करने के लिए मृतक के परिजनों की ओर से तहरीर आने का इंतजार कर रही है। पटेलनगर कोतवाली के वरिष्ठ उप निरीक्षक मनमोहन नेगी ने बताया कि यूपी के प्रतापगढ़ जमालपुर निवासी दिलशाद उम्र 23 वर्ष निरंजनपुर स्थित सब्जी मंडी में आढ़ती के यहां नौकरी करता था। रविवार रात करीब साढ़े आठ बजे वह मंडी के पास से पैदल जा रह था। तभी किसी वाहन की टक्कर से वह गंभीर घायल हो गया। उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया तो वहां मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने घटनास्थल के पास के लोगों से जानकारी ली। इस दौरान पता लगा कि बाइक सवार व्यक्ति दिलशाद को टक्कर मारने के बाद फरार हुआ। पुलिस आरोपी बाइक सवार की पहचान की कोशिश कर रही है।

किशोरी चार महीने की गर्भवती निकली, मुकदमा दर्ज

देहरादून। पटेलनगर क्षेत्र में 14 वर्षीय किशोरी करीब चार महीने की गर्भवती निकली। पुलिस और परिजनों ने पूछताछ की तो वह दुष्कर्म करने के आरोपी के बारे में कोई जानकारी नहीं दे पा रही है। मामले में पटेलनगर कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इंस्पेक्टर पटेलनगर केके लुंठी ने बताया कि थाना क्षेत्र की एक 14 वर्षीय किशोरी के पेट में बीते चार अगस्त को तेज दर्द हुआ। परिजन उपचार के लिए दून अस्पताल ले गए। वहां पहले दर्द निवारक दवाएं दी गईं। इसके बाद अल्ट्रासाउंड व अन्य जांच की गई तो वह चार महीने की गर्भवती निकली। यह सुनकर बालिका के परिजन हैरान रह गए। बालिका से पूछताछ की तो दुष्कर्म करने के आरोपी के बारे में वह कुछ नहीं बता पाई। इसके बाद बालिका के भाई ने अस्पताल से मिली रिपोर्ट के आधार पर पटेलनगर थाने में तहरीर दी। इंस्पेक्टर पटेलनगर केके लुंठी ने बताया कि मामले में अज्ञात आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने भी बालिका से दुष्कर्म को लेकर पूछताछ की। अभी उसने पुलिस को भी कुछ नहीं बताया। पुलिस जल्द बालिका के मजिस्ट्रेटी बयान दर्ज कराएगी।

नाकुरी में एक महिला व युवती भागीरथी नदी में बही

उत्तरकाशी। तहसील डुंडा के अंतर्गत नाकुरी शिव मंदिर के पास सोमवार को दो महिलाएं भागीरथी के तेज प्रवाह के चपेट में आने से बह गए। घटना की सूचना मिलते ही आपदा प्रबंधन, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, पुलिस व राजस्व विभाग की टीम घटनास्थल के लिए रवाना हुई। मौके पर रेस्क्यू कार्य जारी है। जारी रेस्क्यू के बीच जोशियाड़ा बैराज में नदी का पानी रोका गया है। जिलाधिकारी डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट ने रेस्क्यू टीमों को पूरी तत्परता और क्षमता के साथ खोज और बचाव चलाने के निर्देश दिए। बताया जा रहा है कि डुंडा ब्लॉक के कुंसी गांव भाटूसेरा निवासी 34 वर्षीय राजेश्वरी पत्नी जगमोहन और उसके साथ मौजूद 20 वर्षीय सोनम पुत्री सोबन सिंह दोपहर एक बजे नदी में जल भरने गए थे। जल भरते समय दोनों महिलाएं नदी के तेज बहाव की चपेट में आ गए। और बहते चले गए।

ऑस्ट्रेलिया में होटल की छत से टकराने से हेलीकॉप्टर त्रैश, पायलट की मौत

सिडनी , ऑस्ट्रेलिया के सुदूर उत्तरी क्वींसलैंड में सोमवार सुबह हेलीकॉप्टर एक होटल की छत से टकराने से त्रैश हो गया। इस दुर्घटना में एक पायलट की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार, मृतक पायलट की उम्र 40 साल बताई जा रही है। वहीं 83 वर्षीय पुरुष और 76 वर्षीय महिला को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने केर्न्स एस्प्लेनेड पर डबल ट्री बाय हिल्टन के आसपास आपातकाल की घोषणा की है।

पुरानी पेंशन पर केंद्रीय अर्धसैनिक बलों के 11 लाख जवानों—अफसरों को झटका

● सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं

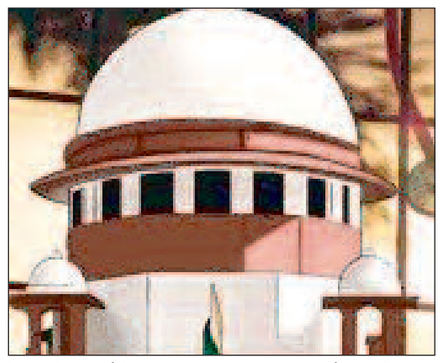

नई दिल्ली। केंद्रीय अर्धसैनिक बलों के उन 11 लाख जवानों/अधिकारियों के लिए झटका है, जो सुप्रीम कोर्ट से 'पुरानी पेंशन' मिलने की आस लगाए बैठे थे। सोमवार को सर्वोच्च अदालत ने इस मामले की सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने उस निर्देश पर अंतरिम रोक की पुष्टि की है, जिसमें पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस), सीसीएस (पेंशन) नियम, 1972 के अनुसार, केंद्रीय अर्धसैनिक बलों/केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के कर्मियों पर भी लागू होने की बात कही गई थी। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ अपील करने के लिए भारत संघ को अनुमति देते हुए यह आदेश पारित किया है। इसके तहत प्रतिवादियों/सीएपीएफ कर्मियों की याचिकाओं का निपटान उच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार किया गया था। सीएपीएफ में ओपीएस लागू करने के लिए ये याचिकाएं पवन कुमार एवं अन्य के द्वारा दायर की गई थी। बता दें कि पवन कुमार मामले में यह माना गया था कि केंद्रीय अर्धसैनिक बल, 'संघ के सशस्त्र बल' हैं। ऐसे में पुरानी पेंशन योजना उन पर भी लागू होती है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष हुई संक्षिप्त सुनवाई में, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी (संघ के लिए) ने बताया, याचिकाकर्ता देश की रक्षा करने वाले बलों के साथ समानता की मांग कर रहे थे। उच्च न्यायालय ने भी माना है कि ओपीएस का लाभ, पवन कुमार मामले में, यह माना गया कि केंद्रीय अर्धसैनिक बल 'संघ के सशस्त्र बल' हैं। पुरानी पेंशन योजना उन पर भी लागू होती है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष हुई संक्षिप्त सुनवाई में, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी (संघ के लिए) ने बताया कि याचिकाकर्ता, देश की रक्षा करने वाले बलों के साथ समानता की मांग कर रहे थे। उच्च न्यायालय ने माना है कि ओपीएस का लाभ, सीएपीएफ कर्मियों पर भी लागू होगा। दूसरी ओर, सीनियर एडवोकेट अंकुर छिब्बर ने प्रतिवादियों (सीएपीएफ कर्मियों) की ओर से अनुरोध किया कि इस मामले में एक निश्चित तारीख दे दी जाए। सुप्रीम कोर्ट ने उनके अनुरोध को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया गया कि मामला इतना जरूरी नहीं है।

यमुनोत्री हाईवे पर वाहन के ऊपर पत्थर गिरने से चालक की मौत

उत्तरकाशी। सोमवार सुबह यमुनोत्री राजमार्ग पर ओरछा बैंड के समीप पहाड़ी से भारी भरकम पत्थर गिरने के कारण एक चौपहिया वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। वाहन चालक गाड़ी के अंदर फंस गया। जिस कारण उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जबकि अन्य दो लोग घायल हुए हैं। एसडीआरएफ की रेस्क्यू टीम ने गाड़ी से चालक का शव बाहर निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा। पुलिस ने बताया कि सोमवार को वाहन बड़कोट से उत्तरकाशी की ओर जा रहा था। इसी दौरान सुबह करीब साढ़े दस बजे यमुनोत्री हाईवे पर ओरछा बैंड के समीप चलती गाड़ी पर पहाड़ी से भारी भरकम पत्थर हाईवे में गिरने शुरू हो गए। इनकी चपेट में वाहन आ गया। जिससे वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। वाहन में तीन लोग सवार थे। बाकी दो लोग वाहन से बाहर निकल गए, लेकिन वाहन चालक गाड़ी के अंदर ही फंस गया। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची रेस्क्यू टीम ने गाड़ी के अंदर फंसे 54 वर्षीय वाहन चालक पुष्कर सिंह मलुड़ा पुत्र पंचराम सिंह निवासी ग्राम भड़कोट धौंतरी को मृत हालत में बाहर निकाला।

सावन के चौथे सोमवार को बड़ा हादसा

सिद्धेश्वर नाथ मंदिर में भगदड़ मचने से 7 लोगों की मौत, कई घायल

जहानाबाद ,बिहार के जहानाबाद जिले में सावन के चौथे सोमवार बड़ा हादसा हुआ है। वाणावर स्थित बाबा सिद्धेश्वर नाथ मंदिर में सोमवार सुबह भगदड़ मच गई। इसमें छह महिलाओं समेत सात लोगों की मौत हो गई।

सावन के चौथे सोमवार के चलते सिद्धेश्वर नाथ मंदिर में दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ सोमवार देर रात से ही लगी हुई थी। यह घटना सोमवार को रात करीब 1:00 बजे घटित हुई। बताया जा रहा है कि मंदिर में दर्शन को लेकर कुछ श्रद्धालुओं में कहासुनी हुई। इस दौरान पुलिस ने उन्हें तितर–बितर करने के लिए लाठीचार्ज किया। इसके बाद मंदिर में अचानक भगदड़ मच गई। जहानाबाद के नगर थाना प्रभारी दिवाकर कुमार विश्वकर्मा ने कहा, मंदिर में भगदड़ मचने के कारण कुछ लोग दब गए, जिनमें से सात लोगों की मौत हो गई। जबकि एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। जदयू के जिलाध्यक्ष दिलीप कुशवाहा ने श्रद्धालुओं की मौत पर दुख जताया। उन्होंने कहा, मंदिर में भदगड़ की जानकारी मिली थी। मौके पर पहुंचे तो पता चला कि लगभग सात लोगों की मौत हो गई। घायलों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि रविवार रात से ही मंदिर में भारी भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी और इसके बाद सोमवार तड़के वहां भगदड़ मच गई। फिहाल पुलिस ने सभी सात शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस प्रशासन द्वारा घटनास्थल पर पहुंचकर राहत और बचाव कार्य चल रहा है।

बांग्लादेश : मोहम्मद यूनुस आज अल्पसंख्यक नेताओं के साथ करेंगे बैठक

ढाका , बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस मंगलवार को ढाका में देश के अल्पसंख्यक समुदायों के नेताओं के साथ बैठक करेंगे। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के 5 अगस्त को इस्तीफे के बाद से देश में हिंदुओं पर लगातार हो रहे हमलों और बर्बरता की घटनाओं की पृष्ठभूमि में यह बैठक होने जा रही है। बांग्लादेशी इस्लामी विद्वान अबुल फैयाज मोहम्मद खालिद हुसैन वर्तमान में यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार में धार्मिक मामलों के सलाहकार हैं। उन्होंने सोमवार को ढाका में पत्रकारों को बताया, वर्तमान सरकार सांप्रदायिक सद्भाव में विश्वास करती है और अल्पसंख्यकों पर हमलों की निंदा करती है।

स्थानीय मीडिया के अनुसार, सचिवालय भवन में आयोजित मीडिया ब्रीफिंग में हुसैन ने कहा कि अल्पसंख्यक समुदायों पर हमले उपद्रवियों ने किए हैं और अंतरिम सरकार उनके खिलाफ कार्रवाई करेगी। उन्होंने वादा किया कि उपद्रवियों को सजा दिलाई जाएगी। हुसैन ने यह भी बताया कि नष्ट हुए घरों और मंदिरों की सूची तैयार की जा रही है। पीड़ितों को वित्तीय सहायता दी जाएगी। अंतरिम सरकार के गृह मामलों के सलाहकार ब्रिगेडियर जनरल (सेवानिवृत्त) एम. सखावत हुसैन ने देश में फैली हिंसा के दौरान उन्हें सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहने के लिए रविवार को देश के अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय से माफी मांगी थी।

उल्टी दस्त का प्रकोप : एक ही परिवार की 2 जनजाति बैगा महिलाओं की मौत, मिले 7 नए मरीज

शहडोल , । राष्ट्रीय मानव का दर्जा प्राप्त संरक्षित जनजाति की अपनी विशेष पहचान बनाने वाली बैगा आदिवासियों को संरक्षित रखने की जिम्मेदारी प्रशासन की है। बाबजूद इसके बैगाओ की असमय मौत हो रही है। ताजा मामला शहडोल जिले के गोहपारू ब्लाक में सामने आया है। जहां उप स्वास्थ्य विभाग में ताला जड़ा होने के कारण समय पर इलाज नही मिलने की वजह से उल्दी दस्त से दो बैगा महिलाओं की मौत हो गई। शहडोल जिले के गोहपारू ब्लॉक के बरदौहा गांव में एक ही परिवार की दो महिलाओं की उल्टी दस्त से मौत हो गई है। 32 वर्षीय उर्मिला बैगा और 9 वर्षीय श्यामबाई बैगा उल्टी दस्त के शिकार हो गईं। उर्मिला की हालत बिगड़ने पर पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, लेकिन वहां कोई उपस्थिति नहीं थी। फिर गोहपारू अस्पताल लाया गया, जहां गंभीर स्थिति को देखते हुए शहडोल रेफर कर दिया गया। लेकिन वहां पहुंचने के दौरान उर्मिला की मौत हो गई। इसी प्रकार, श्यामबाई भी उल्टी दस्त की चपेट में आई और गोहपारू अस्पताल ले जाई गई, जहां से जिला अस्पताल रेफर किया गया, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी मौत हो गई। दो मौतों के बाद गांव में हडकंप मच गया। स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची और जांच की, जिसमें 7 नए मरीज उल्टी दस्त से पीड़ित पाए गए। इनका इलाज जारी है। गांव में शुद्ध पेयजल की कमी के कारण उल्टी दस्त का प्रकोप बढ़ गया है।

समूहों के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को मिल रही नई पहचान : धामी

● सीएम धामी ने किया महिला समूहों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का शुभारंभ

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोमवार को सचिवालय में मुख्यमंत्री सशक्त बहना उत्सव योजना एवं मुख्यमंत्री महिला स्वयं सहायता समूह सशक्तिकरण योजना के अन्तर्गत महिला समूहों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने इन स्टॉलो का अवलोकन करते हुए स्थानीय उत्पादों (घी एवं अन्य) की खरीदारी भी की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रदेश में महिला स्वयं सहायता समूह को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। राज्य की महिलाएं समूहों के माध्यम से बहुत बेहतर उत्पाद बना रही है।

समूहों के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को नई पहचान मिल रही है एवं रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि रक्षा बंधन से पूर्व स्वयं सहायता समूह द्वारा राखियां बनाई जा रही हैं। सरकार द्वारा महिलाओं को अपने उत्पाद बेचने के लिए उन्हें सुविधा अनुसार मंच उपलब्ध कराया जा रहा है।

उन्होंने समस्त प्रदेशवासियों से आगामी रक्षा बंधन के लिए स्थानीय स्तर पर बनी राखियों एवं अन्य उत्पाद खरीदने का आग्रह किया। सचिवालय में बड़ोवाला से देवभूमि स्वयं सहायता समूह, डाकपत्थर से वैभव लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह, रायपुर से मिलन स्वयं सहायता समूह, सहसपुर से आस्था क्लस्टर लेवल फेडरेशन, हवालबाग अल्मोड़ा से विकास क्लस्टर लेवल फेडरेशन, आस्था क्लस्टर लेवल फेडरेशन, विरांगना क्लस्टर लेवल फेडरेशन, एवं अन्य स्वयं सहायता समूहों द्वारा अपने उत्पाद बेचें जा रहे हैं।

तिरंगा है हमारी शान, साहस और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक: रेखा आर्या

कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने निकाली तिरंगा यात्रा,लोगो से की अपने–अपने घरों व प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराने की अपील

देहरादून। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 'हर घर तिरंगा अभियान" के तहत देहरादून के गांधी पार्क से परेड ग्राउंड तक भव्य तिरंगा यात्रा का शुभारंभ किया।यात्रा के शुभारंभ से पूर्व उन्होंने महात्मा गांधी और शहीदों की प्रतिमा पर पुष्पांजलि और श्रद्धासुमन अर्पित किए।तिरंगा यात्रा में खेल व युवा कल्याण विभाग के अधिकारीगण, पीआरडी स्वयंसेवक और स्कूली बच्चों ने प्रतिभाग किया।इस दौरान यात्रा में शामिल लोगों ने भारत माता की जय का उद्घोष कर माहौल को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि यह यात्रा देशभक्ति और एकता का प्रतीक है।जिन शहीदों ने हमें आजादी दिलवाई उनको नमन करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए इस तिरंगा यात्रा की शुरुआत की गई है। उन्हीं की वजह से आज हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं।राष्ट्रध्वज हमारी आन बान शान, साहस और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।उन्होंने इसके मूल्यों को बनाए रखते हुए एक सशक्त भारत का निर्माण करने की सभी से अपील की।साथ ही सभी से 11–15 अगस्त अपने–अपने घरों व प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराने और "हर घर तिरंगा" अभियान का हिस्सा बनने और अपनी सेल्फी पर अपलोड करने की अपील भी की।

वायनाड भूस्खलन : 150 लापता लोगों की तलाश जारी

वायनाड , वायनाड भूस्खलन त्रासदी के 14वें दिन सोमवार को 150 से अधिक लापता लोगों की तलाश के लिए अभियान जारी है। राज्य में 30 जुलाई को आई प्राकृतिक आपदा में 416 लोगों की मौत हो गई है। अधिकारियों के अनुसार, सोमवार को डीएनए परीक्षण का पहला नतीजा आने की उम्मीद है। ये डीएनए उन मृतकों के हैं जिन्हें मेप्पाडी ग्राम परिषद में दफनाया गया है। अधिकारियों ने कहा कि हर एक कब्र को एक नंबर दिया गया है। डीएनए के नतीजे आने के बाद जीवित बचे लोग अपने प्रियजनों की पहचान कर सकेंगे। अधिकारियों ने कहा कि अगर पहचान के बाद उन्हें कोई और धार्मिक आयोजन या अनुष्ठान करने की जरूरत है, तो वे ऐसा कर सकते हैं। वहीं राहत शिविरों में और उनके आसपास बने विशेष काउंटर्स पर सभी बचे हुए लोग अपने खोए हुए दस्तावेजों के लिए आज आवेदन कर सकते हैं। 100 से ज्यादा राहत शिविरों में 11 हजार से अधिक लोग रह रहे हैं। अधिकारियों ने वादा किया है कि वे लोगों को राहत शिविरों से उनके घरों और क्षेत्र के अन्य स्थानों पर पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। लगभग 250 बंद घरों की पहचान की गई है। अधिकारी राहत शिविरों में रह रहे लोगों को आवास आवंटित करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी–नेट परीक्षा रद्द करने को चुनौती देने वाली याचिका की खारिज

नई दिल्ली ,सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कथित पेपर लीक के आधार पर यूजीसी–नेट 2024 परीक्षा रद्द करने को चुनौती देने वाली याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा, परीक्षा रद्द हुए करीब दो महीने बीत चुके हैं और अब नए सिरे से परीक्षा अगले कुछ दिनों में आयोजित की जाएगी। इस मामले को देखते हुए, वर्तमान चरण में संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत याचिका पर विचार करने से केवल अनिश्चितता बढ़ेगी और इसका परिणाम घोर अराजकता होगा।

पीठ में जस्टिस जेबी पारदीवाला और मनोज मिश्रा भी शामिल थे। पीठ ने कहा कि इसी तरह की राहत की मांग करने वाली एक जनहित याचिका (पीआईएल) को पहले भी सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया था। यूजीसी–नेट अभ्यर्थियों के एक समूह ने याचिका में परीक्षा को नए सिरे से आयोजित करने के निर्णय पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। अधिवक्ता रोहित कुमार के माध्यम से दायर याचिका में दावा किया गया है कि सीबीआई जांच के दौरान हाल ही में सामने आए नतीजों को देखते हुए पूरी परीक्षा रद्द करने का फैसला न केवल मनमाना है, बल्कि अन्यायपूर्ण भी है।

याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में तर्क दिया, परीक्षा रद्द होने से उम्मीदवारों को काफी परेशानी, चिंता और संसाधनों की अनावश्यक बर्बादी हुई है। इस फैसले ने अनगिनत छात्रों की अकादमिक और पेशेवर योजनाओं को बाधित किया है, जिससे परीक्षा प्रणाली में उनका विश्वास कम हुआ है। झूठे सबूतों के आधार पर परीक्षा रद्द करना न्याय की घोर विफलता है। यह भारत के संविधान में निहित निष्पक्षता और समता के मौलिक सिद्धांतों का उल्लंघन है। याचिका में सीबीआई जांच पूरी होने तक परीक्षा पर रोक लगाने की अपील की गई थी और सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में तत्काल जांच की मांग की गई। 19 जून को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने देश के विभिन्न शहरों में एक दिन पहले आयोजित हुए यूजीसी–नेट 2024 परीक्षा को निरस्त कर दिया था। परीक्षा प्रक्रिया में गड़बड़ी की आशंका थी।

हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पर शेयर बाजार को लेकर राहुल गांधी का दावा फेल

सोशल मीडिया पर यूजर्स दे रहे प्रतिक्रिया

नई दिल्ली ,सोमवार की सुबह भारतीय शेयर बाजार तेजी के साथ खुला। सेंसेक्स ने 300 से ज्यादा अंकों की छलांग के साथ ओपनिंग शुरू की। बेंचमार्क इंडेक्स हरे निशान पर लौटे। जबकि हिंडनबर्ग रिसर्च की ओर से सेबी पर लगाए गए आरोप के बाद यह दावा किया जा रहा था कि घरेलू शेयर बाजार में सोमवार को भारी गिरावट देखने को मिलेगी। हालांकि दावे के अनुसार घरेलू शेयर बाजार सोमवार को गिरावट के साथ शुरू तो हुआ लेकिन इसने जल्द ही रफ्तार पकड़ ली और उसने संभलते हुए 300 से ज्यादा अंक की वृद्धि दर्ज कर ली। इसके बाद बाजार विशेषज्ञों ने भी कहना शुरू कर दिया कि अंतरराष्ट्रीय शोध कंपनी के नकारात्मक रिपोर्ट के बाद भी घरेलू शेयर बाजार ने इस रिपोर्ट के दावे को खारिज कर दिया है। सेंसेक्स और निफ्टी में जारी तेजी ने बाजार का रूख बता दिया। जबकि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने चिंता जताई थी कि देशभर के ईमानदार निवेशकों के मन में सरकार के लिए कई सवाल हैं। जैसे, सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच ने अभी तक इस्तीफा क्यों नहीं दिया? अगर निवेशकों की गाढ़ी कमाई डूब जाती है, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? उन्होंने यह इल्जाम भी लगाया था कि सेबी अध्यक्ष के खिलाफ लगे आरोपों से लगता है कि संस्था की शुचिता के साथ गंभीर समझौता हुआ है, ऐसे में क्या उच्चतम न्यायालय इस मामले पर फिर स्वतः संज्ञान लेगा। राहुल गांधी ने इसके साथ ही कहा था कि देश भर के लोगों ने अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को बाजार में निवेश किया है। ऐसे में इस रिपोर्ट के बाद उनका निवेश रिस्क जोन में पहुंच गया है। लेकिन, जिस तरह से आज ओपनिंग के बाद से बाजार का रूख नजर आ रहा है उससे तो साफ पता चलता है कि यह बाजार की सामान्य प्रक्रिया है। क्योंकि शेयर बाजार इतनी गिरावट या उछाल के साथ तो हर रोज खुलता या बंद होता है। इस रिपोर्ट का भारतीय बाजार पर ना तो कोई असर नजर आ रहा है और ना ही निवेशकों का विश्वास घरेलू शेयर बाजार को लेकर डिगा है। ऐसे में यह रिपोर्ट स्वतः खारिज हो जा रही है।ऐसे में राहुल गांधी के भारतीय शेयर बाजार को लेकर रिपोर्ट के बाद किए गए दावों पर सोशल मीडिया पर यूजर्स भी अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। लोग लिख रहे हैं कि सेंसेक्स सकारात्मक रूख के साथ शुरू हुआ है और 300 अंक ऊपर है। यह भारतीय निवेशकों द्वारा राहुल गांधी और उनके सहयोगी हिंडनबर्ग को करारा तमाचा है। राहुल गांधी ने यह डर फैलाया कि शेयर बाजार में निवेश किया गया भारतीयों का पैसा खतरे में है, बाजार ढह जाएगा। उन्होंने बाजार को गिराने के लिए ऐसा किया। उन्होंने हिंडनबर्ग एजेंडा चलाने के लिए भुगतान भी किया। निवेशकों ने रिपोर्ट देखी और कुछ नहीं पाया, वे जानते हैं कि हिंडनबर्ग भारत के खिलाफ एजेंडा चला रहा है, जिसका समर्थन केवल राहुल गांधी कर रहे हैं। वहीं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक और अन्य यूजर ने लिखा कि राहुल गांधी ने रविवार को भारतीय शेयर बाजार पर हमला करने की पुरजोर कोशिश की। उन्होंने सोचा कि सोमवार को बाजार गिर जाएगा और उनके पास मोदी सरकार पर हमला करने का एक और मौका होगा। उन्होंने हिंडनबर्ग रिपोर्ट पर ट्वीट करने के लिए कई खातों को ?5,000/– की पेशकश भी की, लेकिन, भारतीय शेयर बाजार ने कांग्रेस को करारा जवाब दिया। वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा, राहुल गांधी द्वारा सेंसेक्स को नुकसान पहुंचाने और भारत में मध्यम वर्ग को बड़ा नुकसान पहुंचाने और भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने की आर्थिक साजिश विफल हो गई है। अभी तक बाजार स्थिर है, राहुल गांधी के देर शाम आए इस बयान को भारत ने खारिज कर दिया है।वहीं एक अन्य यूजर ने राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए लिखा, बधाई हो राहुल गांधी भारतीयों से ह्यप्रामाणिकह्ल हिंडेनबर्ग रिपोर्ट के आधार पर भारतीय शेयर बाजारों का बहिष्कार करने के लिए कहने के लिए। लोगों ने आपकी बात सुनी और इस तरह प्रतिक्रिया दी। आप एक सच्चे नेता हैं। सेंसेक्स 192.20 अंक या 0.24ल बढ़कर 79,898.11 पर और निफ्टी 41.60 अंक या 0.17ल बढ़कर 24,409.10 पर नजर आ रहा है।

संपादकीय

विकास से समझौता नहीं

बातें चाहे जितनी भी हो लेकिन वास्तविकता यह है कि उत्तराखंड में अभी राजनीतिक स्थिरता के कोई भी आसान नजर नहीं आ रहे हैं। चाहे जिसने भी नेतृत्व परिवर्तन को हवा दी हो लेकिन दिल्ली हाई कमान आज भी उत्तराखंड को लेकर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व पर अडिग है। जहां एक तरफ पिछले कुछ दिनों से दिल्ली दरबार में लगने वाली हाजिरी को लेकर अटकलें लगाई जा रही थी तो वहीं मुख्यमंत्री इस सबसे किनारा करते हुए अपने मंत्रिमंडल के विस्तार की तैयारी में जुटे हुए हैं। दिल्ली दरबार में दस्तक को अब मंत्रिमंडल के विस्तार से भी जोड़कर देखा जाने लगा है साथ ही अभी तय है कि कुछ कैबिनेट मंत्रियों के पर कतरे जा सकते हैं और उनके स्थान पर नए लोगों को इस बार मंत्रिमंडल में जगह मिल सकती है। हालांकि यह भी एक सत्य है कि उत्तराखंड की तो यह नियती रही है कि यहां नेतृत्व परिवर्तन समय–समय पर हावी होता, आया है। बिना कार्यकाल पूरा किया कई मुख्यमंत्री कुर्सी से हटा दिए गए जिसके लिए उत्तराखंड पूरे देश में उपहास का कारण भी बना है। सत्ता पक्ष के नेताओं का दिल्ली दरबार में पहुंचना हमेशा नेतृत्व परिवर्तन की संभावनाओं को ही हवा देता आया है लेकिन जिस प्रकार से पिछले कुछ समय में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाओं से लेकर नकल विधेयक, समान नागरिक संहिता कानून या फिर भरती प्रकरण को लेकर जिस प्रकार से निर्णय लिए हैं उससे उन्होंने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा है। यही कारण है कि हाई कमान का सीएम धामी के नेतृत्व में ना ना नुकुर का कोई सवाल ही नहीं उठता और दिल्ली दरबार की यह हाजिरी कोई अधिक प्रभाव छोड़ने वाली नहीं है। इन संभावनाओं की चर्चा हो सकती है कि अपनी कैबिनेट की कुर्सी बचाने के लिए या फिर मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए दिल्ली दरबार की दस्तक जरूरी हो सकती है लेकिन जब बात इन मुलाकातों को नेतृत्व परिवर्तन से जोड़कर की जाएगी तो इसके कोई मायने निकालकर नहीं आएंगे। यह तो तय है कि सीएम धामी के नेतृत्व में जल्दी मंत्रिमंडल का विस्तार और परिवर्तन देखने को मिलेगा और जिस प्रकार के संकेत मिले हैं उन्हें हाई कमान से भी मंत्रिमंडल को चुनने की पूरी स्वतंत्रता प्रदान की गई है जिस पर किसी भी प्रकार का दखलअंदाज नहीं होगा। अब तक देखा जाए तो सीएम धामी का अब तक का कार्यकाल बड़े फैसलों के लिए भी चर्चाओं में रहा है। बद्रीनाथ एवं मंगलौर विधानसभा उपचुनाव को छोड़ दें तो फिलहाल सीएम धामी के खाते में सफलताएं अधिक ही नजर आती हैं। यूं भी पिछले कुछ समय में उत्तराखंड की राजनीति में जिस प्रकार से मुख्यमंत्री को बदलने की परंपरा देखी गई है उस पर भारतीय जनता पार्टी अब चलने से परहेज करेगी। महत्वाकांक्षाओं का अंत तो कभी भी नहीं हो सकता लेकिन निजी महत्वाकांक्षा के लिए पूरे प्रदेश को विकास की गति से विमुख नहीं किया जा सकता।

भाजपा को चुनौतियों का सामना

सत्ता और संगठन से जुड़े अनेक नेता भी विचारधारा की कसौटी पर खरा उतरने नहीं दिखे। किंतु राजनीति के दूसरे दलों और नेताओं से तुलना करें तो तस्वीर बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी। निस्संदेह, भाजपा को संगठन तथा सत्ता की सोच तथा आचार व व्यवहार में व्यापक संवेदनशील बदलाव की आवश्यकता है और यह आसानी से नहीं हो सकता। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय ऐसी समितियां बनें जो स्थानीय कार्यकर्ताओं, नेताओं, समर्थकों से बातचीत कर तथ्य इका करें और उनके अनुसार तात्कालिक और दूरगामी दृष्टि से जो कुछ चिंतन, व्यवहार और चेहरे के स्तर पर बदलाव होना चाहिए वह किया जाए। व्यक्तिगत बातचीत या सोशल मीडिया की बहस में शिक्षा, इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य, समाज विज्ञान आदि से जुड़ी संस्थाओं ने वाकई 10 वषो में ऐसे रेखांकित करने वाले काम नहीं किया जिसे वषो से चले आरोपित विकृत वामपंथी सिद्धांत, धारणाएं और नैरेटिव ध्वस्त हो सके। सरकारी विभागों को तो छोड़िए इन संस्थानों, विविद्यालयों आदि के संरचनात्मक ढांचे में भी बदलाव नहीं हुआ। कुल मिलाकर इनकी प्रकृति से ऐसा लगता नहीं कि वाकई पुरानी सोच और व्यवहार वाली सत्ता बदल चुकी है। इससे सक्रिय बौद्धिक वर्ग और नैरेटिव की लड़ाई लडने वालों को धक्का पहुंचना बिल्कुल स्वाभाविक है। किंतु दूसरी ओर यह भी सच है मोदी सरकार ने भारत के दूरगामी भविष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्य किए जिनकी कल्पना पहले नहीं की गई थी।

अवधेश कुमार

भाजपा इस समय एक साथ जिन चुनौतियों का सामना कर रही है उनमें हमें विपक्षियों का आक्रमण शायद सबसे बड़ा दिखता होगा। किंतु विपक्ष का विरोध और तेवर उनके लिए अपेक्षित है तथा इसका मुकाबला करने में भाजपा को संकोच भी नहीं हो सकता।

आप अगर धरातल पर काम करते हैं या सोशल मीडिया पर दृष्टि है तो देखेंगे कि इस समय भाजपा को लेकर सबसे ज्यादा नाराजगी और निराशा उनके स्वयं के कार्यकर्ता, स्थानीय नेता और प्रतिबद्ध समर्थक प्रकट कर रहे हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं, नेताओं और समर्थकों में ऐसे लोगों की संख्या छोटी–मोटी नहीं है जिनके विश्लेषणों, वक्तव्यों और व्यवहार में भावनाएं आबद्ध होतीं हैं।

भाजपा की यही सबसे बड़ी ताकत है तो इन्हें संभालना नेतृत्व के लिए वैसी ही चुनौती भी है। चुनाव में भाजपा के उम्मीद से कमजोर प्रदर्शन को देखते हुए अनुमान लगाया गया था कि ऐसे लोग अब शांत होंगे। ऐसा हुआ नहीं है।

आश्चर्य की बात है कि काफी पढ़े–लिखे और बड़े लोग भी इस समय विपक्ष की आलोचना या विरोध करने की जगह भाजपा नेतृत्व पर ही हमले कर रहे हैं। सरकारों में इनकी या इनके जैसे लोगों की व्यापक अनदेखी, उम्मीदवारों का उनकी कसौटी पर सही नहीं होना तथा केंद्र व प्रदेशों में उच्च पदों पर बैठे अनेक चेहरों तथा उनकी भूमिकाओं में इनकी शिकायतों को स्वीकार करने में समस्या नहीं है। किंतु इनमें ज्यादातर लोग हिन्दुत्व, हिन्दुत्व अभिमुख राष्ट्र भाव, आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा, धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, इतिहास, सामाजिक न्याय आदि के आधार पर अपना विचार और व्यावहारिक निर्धारित करते हैं।

वास्तव में ये दोनों अलग–अलग पहलू हैं। साफ है कि भावावेश में इस सच को नजरअंदाज कर रहे हैं कि इन मामलों पर स्वतंत्रता के बाद किसी सरकार ने काम किया है तो वह नरेन्द्र मोदी सरकार ही है। स्वयं प्रधानमंत्री मोदी इस मायने में राजनीति में आज तक के सबसे प्रखर, मुखर और निर्णय लेने वाले नेता बन चुके हैं। 2019 में अमित शाह द्वारा गृह मंत्रालय संभालने तथा सरकार में दूसरे निर्णायक की भूमिका में आने के बाद हिन्दुत्व व भारतीयत्व के मामले में सरकार सोच और नीतियों में ज्यादा दृढ़ हुई है। यह तो संभव है कि जिस गति और परिमाण में समर्थकों का एक बड़ा समूह काम करने की अपेक्षा रखता था वह नहीं हुआ।

सत्ता और संगठन से जुड़े अनेक नेता भी विचारधारा की कसौटी पर खरा उतरने नहीं दिखे। किंतु राजनीति के दूसरे दलों और नेताओं से तुलना करें तो तस्वीर बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी। निस्संदेह, भाजपा को संगठन तथा सत्ता की सोच तथा आचार व व्यवहार में व्यापक संवेदनशील बदलाव की आवश्यकता है और यह आसानी से नहीं हो सकता। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय ऐसी समितियां बनें जो स्थानीय कार्यकर्ताओं, नेताओं, समर्थकों से बातचीत कर तथ्य इका करें और उनके अनुसार तात्कालिक और दूरगामी दृष्टि से जो कुछ चिंतन, व्यवहार और चेहरे के स्तर पर बदलाव होना चाहिए वह किया जाए। व्यक्तिगत बातचीत या सोशल मीडिया की बहस में शिक्षा, इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य, समाज विज्ञान आदि से जुड़ी संस्थाओं ने वाकई 10 वषो में ऐसे रेखांकित करने वाले काम नहीं किया जिसे वषो से चले आरोपित विकृत वामपंथी सिद्धांत, धारणाएं और नैरेटिव ध्वस्त हो सके।

सरकारी विभागों को तो छोड़िए इन संस्थानों, विविद्यालयों आदि के संरचनात्मक ढांचे में भी बदलाव नहीं हुआ। कुल मिलाकर इनकी प्रकृति से ऐसा लगता नहीं कि वाकई पुरानी सोच और व्यवहार वाली सत्ता बदल चुकी है। इससे सक्रिय बौद्धिक वर्ग और नैरेटिव की लड़ाई लडने वालों को धक्का पहुंचना बिल्कुल स्वाभाविक है। किंतु दूसरी ओर यह भी सच है मोदी सरकार ने भारत के दूरगामी भविष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्य किए जिनकी कल्पना पहले नहीं की गई थी।

जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति, नागरिकता संशोधन कानून, एक साथ तीन तलाक के विरु द्ध कानून, भाजपा की राज्य सरकारों द्वारा गो हत्या निषेध की कानूनी व्यवस्था, पाकिस्तान सीमा के अंदर कार्रवाई, भारतीय सभ्यता–संस्कृति के अनुरूप जी–20 और कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन, विदेश यात्राओं में मोदी द्वारा भारतवंशियों के बीच संबोधन से भारतवंशियों में भारत, भारतीय सभ्यता–संस्कृति और हिन्दुत्व को लेकर गर्व का भाव पैदा करने, काशी तमिल संगम जैसे कार्य विचारधारा वाले कार्यकर्ताओं और नेताओं के लिए संतोष के विषय होने चाहिए।

यह कहना आसान है कि श्रीराम मंदिर का निर्माण तथा रामलला की प्राण प्रतिष्ठा तो उच्चतम न्यायालय के आदेश से संभव हो सका। क्या केंद्र में मोदी के नेतृत्व में सरकार नहीं होती तथा प्रदेश में भी भाजपा की जगह दूसरी सरकार होती तो मंदिर का निर्माण हो पाता? आज अमेरिका सहित विश्व के कई प्रमुख देश आरोप लगा रहे हैं कि भारत उनकी धरती पर हत्याएं करवा रहा है। भारत विरोधी आतंकवादी चुन–चुन कर मारे जा रहे हैं।

पाकिस्तान आरोप लगा रहा है कि भारत की एजेंसियां ही हत्या करवा रही है। यह कैसे हो रहा है क्यों हो रहा है इस पर प्रमाणित तथ्य देना कठिन है, किंतु पूर्व में तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। अंतरराष्ट्रीय पटल पर भी एक ऐसे नए मुखर भारत का उदय हुआ है जो अपने राष्ट्रीय हित पर केंद्रित विचार से निर्णय करते समय यह नहीं सोचता कि कौन देश इससे नाराज होगा और कौन खुश। एक समय निर्गुट आंदोलन के नाम से अवश्य वैश्विक संगठन चला, लेकिन निर्गुटता का साकार रूप हमने मोदी सरकार के दौरान ही देखा है।

आज भारत किसी के गुट में नहीं लेकिन किसी के विरुद्ध भी नहीं। 10 वर्षों में प्रधानमंत्री के अप्रोच और सरकार की भूमिका के कारण आज भारत ही नहीं विश्व भर के हिन्दू स्वयं को हिन्दू कहने, अपने त्योहार, प्रमुख दिवस मनाने में वैसे ही मुखर हैं जैसे दूसरे मजहब के लोग। यह ऐसा बदलाव है जिसको सही दिशा दी गई। इसी कारण दुनिया के अनेक शक्तिशाली सरकारी गैर सरकारी शक्तियां मोदी सरकार के विरुद्ध अभियान चलाकर सत्ता से बाहर करना चाहती है। इसलिए भाजपा और सरकार में चेहरे चरित्र और चाल में बदलाव के लिए आवश्यक आवाज उठे किंतु दूसरे पक्ष को ध्यान न रखेंगे तो परिणाम घातक होगा। फिर आप विरोधियों के एजेंडे और लक्ष्य को पूरा करने का काम करेंगे।

चिकित्सा पेशे के सामने मुश्किलें

डॉ संजना ब्रह्मवार मोहन

स्वास्थ्य सेवा के 'व्यवसायीकरण' को लेकर चिंताएं बढ़ती जा रही हैं। उदाहरण के लिए, किडनी प्रत्यारोपण के बारे में आये दिन खबरें आती रहती हैं। ऐसी स्थिति को संज्ञान में लेते हुए इस वर्ष चिकित्सक दिवस (एक जुलाई) को लागू हुए भारतीय न्याय संहिता में यह प्रावधान किया गया है कि लापरवाही बरतने वाले डॉक्टरों को जेल भेजा जा सकता है। नीट परीक्षा में कई गड़बड़ियों और पीजी प्रवेश परीक्षा की तारीख आगे बढ़ाने से देश का ध्यान चिकित्सा शिक्षा की ओर गया है। परीक्षा प्रक्रियाओं को दुरुस्त करने के साथ–साथ यह देखना भी जरूरी है कि और क्या–क्या किया जाना चाहिए, जिससे हमारे डॉक्टर बहुत अच्छा काम कर सकें। राजस्थान के ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र में बुनियादी स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने के अपने एक दशक के काम के दौरान हमने बड़ी संख्या में युवा डॉक्टरों के साथ काम किया है तथा प्राथमिक स्वास्थ्य और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के बहुत चिकित्सकों से भी हमारा संपर्क रहा है। डॉक्टरों को ग्रामीण भारत की वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए हमने कार्यशालाएं भी आयोजित की है। इन अनुभवों के आधार पर कुछ प्राथमिकताओं को इस लेख में रेखांकित किया जा रहा है।

यह एक धारणा है कि पहले के डॉक्टर आज के चिकित्सकों की अपेक्षा कहीं अधिक जानते थे। कई लोगों को याद होगा कि किसी दौर में डॉक्टर एक ब्रीफकेस लेकर मरीज के घर आते थे और उसे देखकर वहीं दवाई दे देते थे या लिख देते थे। वे डॉक्टर अब कहीं नहीं दिखते। पहले मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाई में बहुत मेहनत करनी पड़ती थी और शिक्षक भी पूरी तरह समर्पित होते थे। अब यह कमजोर होता जा रहा है। कार्यशालाओं में कई डॉक्टरों ने बताया कि कॉलेज में उनकी मौजूदगी का मतलब नहीं है और वे घर पर ही अधिकांश पढ़ाई करते हैं। उन्होंने अफसोस के साथ कहा कि उनके शिक्षकों के पास उनके लिए समय नहीं है। एक वरिष्ठ डॉक्टर ने एक मेडिकल छात्र को डांटा था कि उसका काम रोगी का उपचार है, उसके प्रति हमदर्दी रखना नहीं।निजी मेडिकल कॉलेजों से आनेवाली कहानियां भी हमने सुनी हैं। वहां के छात्र धनी परिवारों से आते हैं और कक्षाओं में उनकी रुचि बहुत कम होती है। पढ़ाई के बाद उनमें से अधिकतर अपना अस्पताल खोल लेते हैं। प्रबंधन भी शिक्षकों पर छात्रों को पास कर देने के लिए दबाव बनाता है। डॉक्टरों का एक तीसरा समूह भी तेजी से बढ़ रहा है, जो चीन, रूस और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों से पढ़कर आते हैं। भारतीय कॉलेजों में पढ़ाई की खराब गुणवत्ता के बावजूद यहां पढ़े डॉक्टरों और विदेश से पढ़कर आये डॉक्टरों में बड़ा अंतर है। रोगियों से बात करने में सूचनाओं का स्पष्ट प्रवाह नहीं होता तथा कई डॉक्टर दवाओं के बारे में बुनियादी जानकारी भी नहीं रखते। यह स्थिति ठीक नहीं है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि डॉक्टरों के पास जानकारी और कौशल हो तथा उनमें हमदर्दी की भावना हो।

कुछ माह पहले हमारे एक डॉक्टर को उनके एक डॉक्टर मित्र का फोन आया कि एक मरीज को मलेरिया हुआ है, उसे क्या दवा दी जाए। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में अकेले कार्यरत डॉक्टर से ऐसे सवाल की अपेक्षा की जा सकती है क्योंकि उन्हें एक ही दिन में कई तरह केजी मरीजों को देखना पड़ता है। इसी वजह से हम जैसे कई डॉक्टरों को एक समूह बनाना पड़ा है। हम अपने सवाल समूह में पोस्ट कर देते हैं या मार्गदर्शन के लिए किसी विशेषज्ञ से बात करते हैं। हम ऑनलाइन माध्यम से हर सप्ताह मिलते हैं तथा नयी जानकारियों, रोगों के अध्ययन और अन्य सवालों को साझा करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में कार्यरत डॉक्टरों समेत शहरों में अस्पतालों में काम कर रहे चिकित्सकों से चर्चा में हमने पाया है कि किसी संदेह की स्थिति में परामर्श करने के लिए उनके पास बहुत कम मित्र या वरिष्ठ डॉक्टर उपलब्ध हैं। हमें डॉक्टरों के लिए ऐसी व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए, जिसके माध्यम से वे अपने सवालों के जवाब पा सकें तथा नयी जानकारियों को उन्हें मुहैया कराया जा सके। जरूरी नहीं है कि ऐसी जानकारियां उन्हें दवा कंपनियों से ही मिलें। पंजीकरण के नवीनीकरण के लिए परीक्षा प्रणाली लाने की बात हो रही है। यह ठीक है, पर हमें और भी बहुत कुछ करना होगा।

हम विचार करें कि समाचार चैनलों और सोशल मीडिया पर कैसी खबरें चलती रहती हैं। इन दिनों विश्व कप जीतने और एक उद्योगपति के घर शादी की चर्चाएं हैं। अवैध किडनी प्रत्यारोपण की खबरें ध्यान खींचती हैं, पर उन घटनाओं की सुध क्यों नहीं ली जाती, जिनमें जीवन रक्षा होती है? कुछ दिन पहले हमारे एक क्लिनिक से एक महिला रोगी को 120 किलोमीटर दूर उदयपुर के एक अस्पताल में रेफर किया गया। वहां जाने में उसकी हालत और बिगड़ गयी, पर तुरंत जरूरी उपचार से उसे बचा लिया गया।

ऐसी खबरें भी प्रसारित होनी चाहिए। इसका महत्वपूर्ण प्रभाव डॉक्टरों पर भी होगा, जिनका अपने पेशे के बारे में एक नजरिया है, और समाज पर भी, जो डॉक्टरों को अपनी नजर से देखता है। इन दिनों भारतीय न्याय संहिता और किडनी प्रत्यारोपण के अवैध तंत्र के बारे में चर्चाएं चल रही हैं। हम थोड़ा ठहर कर यह याद करने की कोशिश करें कि हमने पिछली बार कब यह चर्चा की थी कि हमारे युवा चिकित्सक और मेडिकल के छात्र कैसी हालत में रहते हैं और किस प्रकार अपनी पढ़ाई और अपना काम करते हैं? जब ये डॉक्टर हर रोज जिंदगियां बचाते हैं, तब क्या हम उस पर खुशी जताते हैं और उनकी सराहना करते हैं? हमें यह अच्छी तरह से याद है कि कोरोना महामारी के दौरान डॉक्टरों ने कितनी शानदार भूमिका निभायी थी।

हमें ऐसी कहानियों को निरंतर कहते रहना होगा। इनकी अनुपस्थिति और नकारात्मक कहानियों की सतत उपस्थिति से एक क्षोभ पैदा होता है, जो खतरनाक हो सकता है।

वीडी12 से विजय देवरकोंडा का खौफनाक फर्स्ट लुक पोस्टर आउट, 28 मार्च 2025 को रिलीज होगी फिल्म

साउथ सिनेमा के हिट एक्टर विजय देवरकोंडा की अगली फिल्म वीडी12 (अनटाइटल) है. विजय अपनी इस फिल्म से काफी समय से चर्चा में हैं. विजय के फैंस उनकी इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. विजय ने अपने फैंस के लिए शानदार तोफशा पेश किया है. विजय ने आज वीडी12 की रिलीज डेट का एलान कर दिया है. साथ ही एक्टर ने फिल्म से अपना फर्स्ट लुक पोस्टर भी जारी किया है. विजय के फैंस को फिल्म के लिए लंबा इंतजार करना पड़ेगा. विजय को इससे पहले फिल्म कल्कि 2898 एडी में कैमियो करते हुए देखा है और वहीं बतौर एक्टर उनकी फिल्म द फैमिली स्टार रिलीज हुई थी.

वीडी12 को गौतम तिन्नुरी डायरेक्ट कर रहे हैं. वहीं, फिल्म वीडी12 से आए पोस्टर में विजय खूंखार अवतार में दिख रहे हैं. यह फिल्म 28 मार्च 2025 को रिलीज होगी. फिल्म की रिलीज डेट और पोस्टर शेयर कर विजय ने लिखा है, उसकी मंजिल उसका इंतजार कर रही है, गलतियां, खून, सवाल, पुर्नजन्म, 28 मार्च 2025 वीडी12 .रिपोर्ट्स की मानें तो, वीडी12 की शूटिंग एक महीने के अंदर श्रीलंका में शुरू होने वाली है, जहां फिल्म के अहम सीन शूट किए जाएंगे. इससे पहले वीडी12 का 30 दिनों का स्पेशल शूट विजाग (आंध्र प्रदेश) में पूरा हो चुका है. इसमें ज्यादातर सीन बीच लोकेशन के हैं. वीडी12 एक स्पाई थ्रिलर फिल्म है, जो अब श्रीलंका में शूट होगी.नागा वाम्सी इस फिल्म को सितारा एंटरटेनमेंट्स के बैनर तले प्रोड्यूस कर रहे हैं. बता दें, वीडी12 विजय की पहली कॉपी फिल्म है. फिल्म में विजय का एक्शन अवतार देखने को मिलेगा, जो एक्टर के फैंस के लिए किसी ट्रीट से कम नहीं है. कॉप लुक में कोई कमी ना रह जाए इसलिए एक्टर ने इसके लिए फिजिकली भी खूद को खूब ट्रांसफॉर्म किया है.

किच्चा सुदीप की फिल्म मैक्स का दमदार टीजर रिलीज

किच्चा सुदीप के प्रशंसक उनकी आगामी फिल्म की झलक देखने का लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। अब फैंस को तोहफा देते हुए निर्माताओं ने उनकी बहुप्रतीक्षित फिल्म मैक्स का आधिकारिक टीजर रिलीज कर दिया है। विजय कार्तिकेय के निर्देशन में बनी इस कन्नड़ फिल्म में किच्चा सुदीप मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।उनके अलावा इस फिल्म में तेलुगु अभिनेता सुनील, प्रमोद शेट्टी, वरलक्ष्मी सरथकुमार, संयुक्ता हॉर्नड, सुऋथा वागले और अनिरुद्ध भट भी हैं। रिलीज हुआ फिल्म का यह टीजर हुए एक मिनट और छह सेकंड का है।

इसमें कन्नड़ सुपरस्टार दमदार एक्शन अवतार में नजर आए हैं।फिल्म की झलक देखने के बाद एक्शन–थ्रिलर के शौकीनों का उत्साह काफी ज्यादा बढ़ गया है।

सियर्स, ओस्र्के को अफगानिस्तान, श्रीलंका टेस्ट के लिए न्यूजीलैंड की टीम में शामिल किया

ऋइस्टचर्च, तेज गेंदबाज विल ओरूर्के और बेन सियर्स अपने पहले विदेशी रेड–बॉल मैच के अनुभव के लिए तैयार हैं, क्योंकि न्यूजीलैंड ने नोएडा में 9 से 13 सितंबर तक होने वाले एकमात्र टेस्ट में अफगानिस्तान का सामना करने के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है।टिम साउदी टीम का नेतृत्व करेंगे और टॉम लाथम उप–कप्तान बने रहेंगे।माइकल ब्रेसवेल गंभीर अकिलीज़ चोट और फरवरी में उंगली टूट के कारण पिछले 18 महीनों से अधिक समय तक बाहर रहने के बाद टेस्ट टीम में लौट आए। उनका आखिरी टेस्ट मार्च 2023 में वेलिंगटन में श्रीलंका के खिलाफ था, जहां उन्होंने न्यूजीलैंड की पारी की जीत के हिस्से के रूप में पांच विकेट लिए थे।उपमहाद्वीप पर मैचों के दौरान स्पिन के महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद के साथ, न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड ने पहले ही टिम साउदी और उनके साथी तेज गेंदबाजों को हर मैच में इस्तेमाल नहीं किए जाने की संभावना जताई है।उन्होंने कहा,उपमहाद्वीप के टेस्ट दौरे पिचों की प्रकृति और गर्मी तथा नमी के कारण तेज गेंदबाजों से कुछ कठिन सवाल पूछ सकते हैं। हालांकि हम परिस्थितियों के बारे में खुले दिमाग से आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन एक समझ है कि हमारे सभी विभिन्न टेस्टों में गेंदबाजी विकल्पों की आवश्यकता हो सकती है।

स्टीड ने कहा, टिम और मैंने इस पर चर्चा की है, और इन विदेशी दौरों के दौरान खुद सहित तेज गेंदबाजों के कार्यभार को संतुलित करने की आवश्यकता पर चर्चा की है, ताकि टीम को सर्वोत्तम सेवा मिले।टीम में बाएं हाथ के गेंदबाज मिशेल सेंटनर, एजाज पटेल और रचिन रवींद्र के साथ–साथ ब्रेसवेल और ग्लेन फिलिप्स के दाएं हाथ के ऑफ स्पिन के रूप में पांच स्पिन विकल्प हैं।

खेल खेल में का नया गाना डू यू नो हुआ आउट, दिलजीत दोसांझ के पार्टी ट्रैक पर जश्न मनाते नजर आए सितारे

खेल खेल में स्वतंत्रता दिवस 2024 पर दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह तैयार है। अक्षय कुमार और तापसी पन्नू, वाणी कपूर, फरदीन खान , एमी विर्क, आदित्य सील और प्रज्ञा जायसवाल सहित बाकी स्टार कास्ट हंसी और रहस्यों से भरपूर सवारी का वादा करते हैं। अब इसी बीच फिल्म का एक नया गाना अब रिलीज़ हो गया है। डू यू नो दिलजीत दोसांझ के ओरिजिनल वर्जन का रीक्रिएशन है और इसमें दोस्तों के समूह को अपनी यारी मनाते हुए दिखाया गया है।आपको बता दें कि निर्माताओं ने आगामी फिल्म ह्यखेल खेल मेंह्न के एल्बम से एक नया गाना रिलीज़ किया। डू यू नो एक पार्टी ट्रैक है, जिसे दिलजीत दोसांझ ने गाया है और इसके बोल जानी ने लिखे हैं। मूल संगीत बी प्राक द्वारा रचित था और तनिष्क बागची द्वारा फिर से बनाया गया था। इसकी आकर्षक धुनें आपको अपने दोस्तों के साथ थिरकने पर मजबूर कर देंगी।इस जोशीले ट्रैक में अक्षय कुमार, वाणी कपूर, तापसी पन्नू, एमी विर्क, फरदीन खान, आदित्य सील और प्रज्ञा जायसवाल जैसे कलाकार एक क्लब में एक साथ पार्टी करते हुए दिखाई देते हैं। अक्षय के डांस मूव्स हाइलाइट हैं, जबकि वाणी और तापसी के साथ उनकी केमिस्ट्री ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। इसे यारों वाली फिल्म का यारी वाला एंथम कहा गया है।

इस म्यूजिक़ वीडियो के कमेंट सेक्शन में फैन्स ने अपनी उत्साही प्रतिक्रियाओं से तुरंत बाढ़ ला दी। एक यूजर ने लिखा, ह्यअक्षय कुमार, जानी, एमी, तापसी, वाणी, तनिष्क– रोंगटे खड़े कर देने वाले ह्न, दूसरे ने अक्षय के डांस की तारीफ करते हुए लिखा, ह्यअक्की का डांस मूव कमाल का था। तीसरे यूजर ने लिखा, दिलजीत दोसांझ का मशहूर गाना प्त डू यू नो इसे स्टाइल में फिर से बनाया गया है और अक्षय कुमार ब्लैक आउटफिट में शानदार दिख रहे हैं ह्न तीसरे यूजर ने लिखा, यह एक बेहतरीन पार्टी सॉन्ग है, इसे मिस न करें। कई यूजर्स ने इसे ब्लॉकबस्टर कहा और अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए लाल दिल और आग वाले इमोजी ड्रॉप किए।

खेल खेल में गुलशन कुमार, टी–सीरीज और वाकाओ फिल्म्स द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

मिनी आईपीएल जैसी होगी दिल्ली प्रीमियर लीगः आयुष बदौनी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रीमियर लीग के उद्घाटन के करीब आते ही, साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स के लिए खेलने वाले मार्की खिलाड़ी आयुष बदौनी ने आगामी लीग की तुलना आईपीएल से की। आयुष बदौनी ने इस बारे में अपनी उत्सुकता साझा करते हुए कहा, यह मिनी इंडियन प्रीमियर लीग की तरह होगी। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) द्वारा शुरू की गई डीपीएल 17 अगस्त से 8 सितंबर तक नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में आयोजित की जाएगी। अब तक 62 टी20 मैचों में 977 रन बनाने वाले बदौनी ने कहा, दिल्ली प्रीमियर लीग खिलाड़ियों को बेहतरीन अनुभव प्रदान करेगी। मेरे लिए, यह मिनी आईपीएल की तरह होगी। इस तरह के मैच खेलने से हमेशा आत्मविश्वास बढ़ता है। इससे मुझे और दिल्ली के क्रिकेटरों को बेहतरीन अनुभव मिलेगा। स्टार खिलाड़ियों के खिलाफ खेलने की संभावना पर बात करते हुए, 24 वर्षीय बल्लेबाज ने कहा, दिल्ली के खिलाड़ी अपनी आक्रामक क्रिकेट के लिए जाने जाते हैं।

डोमेस्टिक क्रिकेट खेलेंगे रोहित और विराट कोहली

नईदिल्ली, भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली ने टी–20 वर्ल्ड कप 2024 के तुरंत बाद ही टी–20 इंटरनेशनल से संन्यास ले लिया था. अब भारत को इस साल सिर्फ टेस्ट क्रिकेट में खेलते नजर आएंगे, लेकिन इस बीच रिपोर्ट्स के हवाले से जानकारी सामने आ रही है कि रोहित और विराट 5 सितंबर में खेली जाने वाली घरेलू दलीप ट्रॉफी में खेलते नजर आ सकते हैं.

भारतीय टीम को सितंबर महीने से साल के आखिर तक 3 टेस्ट सीरीज खेलनी हैं. बांग्लादेश और न्यूजीलैंड की मेजबानी करने के बाद टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी. लेकिन, इस बीच भारतीय स्टार क्रिकेटर्स रोहित शर्मा और विराट कोहली फ्री रहेंगे. ऐसे में बीसीसीआई आगामी टेस्ट सीरीज के लिए इन दोनों दिग्गजों को तैयार करने के लिए घरेलू क्रिकेट खिला सकता है.

रिपोर्ट्स की मानें, तो 5 सितंबर से शुरू हो रही दलीप ट्रॉफी में रोहित–विराट खेलते हुए दिख सकते हैं. बीसीसीआई इस घरेलू टूर्नामेंट को नए तरीके से कराने की ताक में है.

रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि दलीप ट्रॉफी में अजीत अगरकर की अगुवाई वाला पैनल 4 टीमें इंडिया ए, बी, सी और डी के साथ नए रूप में हिस्सा लेती नजर आएंगी जबकि इससे पहले इस टूर्नामेंट में जोन की टीमें हुआ करती थी.

भारत के घरेलू क्रिकेट के सत्र का आगाज होने को है. दलीप ट्रॉफी टूर्नामेंट 5 सितंबर से 24 सितंबर तक खेला जाएगा, जबकि भारत और बांग्लादेश के बीच 19 सितंबर से टेस्ट सीरीज खेली जाएगी, जिसका पहला मैच चेन्नई में होगा. हालांकि, अभी तक आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है कि रोहित और विराट दलीप ट्रॉफी में हिस्सा लेंगे या नहीं.

बताते चलें, रोहित शर्मा और विराट कोहली के अलावा बीसीसीआई ने दलीप ट्रॉफी खेलन के लिए शुभमन गिल, केएल राहुल, अक्षर पटेल, रविंद्र जड़ेजा, यशस्वी जयसवाल, सूर्यकुमार यादव और कुलदीप यादव को भी कहा है.

एक नजर

लोक गायिका रेणु बाला, अंजलि बिष्ट, विपिन नौटियाल के भजनों पर झूमे श्रद्धालु

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : सावन के अंतिम सोमवार को पैराणिक शिव मंदिर एकेश्वर में मंदिर समिति की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। रइंका एकेश्वर, राबाइकॉ एकेश्वर, अटल आदर्श इंटर कॉलेज श्रीकोटखाल के छात्रों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही श्रीमद् भागवत कथा का साप्ताहिक यज्ञ आचार्य मुकेश चतुर्वेदी ने सम्पन्न कराया। राजकीय इंटर कालेज एकेश्वर, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज एकेश्वर, अटल आदर्श इंटर कॉलेज श्रीकोटखाल सहित आस-पास की ग्राम सभाओं की महिला मंगल दलों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं। ब्रह्म कमल सांस्कृतिक कला संगम द्वारा नंदा गौरा की झांकी और भजनों की प्रस्तुतियां दीं गईं। लोक गायिका रेणु बाला, अंजलि बिष्ट तथा लोक गायक विपिन नौटियाल के भजनों पर श्रद्धालु झूमते रहे। ढोलक पर संजय नौटियाल, पैड पर आयुष कंडारी ने साथ दिया। कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता एवं जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष नरेंद्र नेगी ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से संस्कृति को बल मिलता है। मंदिर समिति के अध्यक्ष कुलदीप जोशी, कोषाध्यक्ष हरीश बडोला, तेजपाल सिंह पंवार, राजीव चौहान, प्रदीप बडोला, नरेश सुंदरियाल आदि मौजूद रहे।

युवा पीढ़ी को नशे से दूर रहने पर दिया जोर

जयन्त प्रतिनिधि। सतपुली : विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र अभियान को लेकर सोच नशा मुक्ति केंद्र नौगांव कमंदा सतपुली में सोमवार को जन जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में युवा पीढ़ी को नशे से दूर रहने पर जोर दिया गया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि युवा पीढ़ी को पूरे समाज को भी नशे से दूर रखने के लिए आगे आना होगा। गोष्ठी में चिकित्सा अधिकारी सतपुली डा. आशीष ढौंडियाल ने नशे से होने वाली बीमारी और हानियों के बारे में विस्तार से बताया। केंद्र के संचालक कृष्णा बौठियाल ने कहा कि नशे से युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही है। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पौड़ी के सदस्य पुष्पेंद्र राणा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाया राष्ट्रीय ग्रन्थालयी दिवस

श्रीनगर गढ़वाल : पुस्तकालय विज्ञान के जनक पद्मश्री डॉ. एसआर रंगनाथन की जयंती पर गढ़वाल विवि के केन्द्रीय पुस्तकालय में सोमवार को राष्ट्रीय ग्रन्थालयी दिवस धूमधाम से मनाया गया। पुस्तकालय कर्मियों ने डॉ. रंगनाथन के भारतवर्ष में ग्रन्थालयियों और ग्रन्थालय आन्दोलन के लिए किए गए अभूतपूर्व कार्यों को याद किया। उप पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. हर सिंह ने डा. रंगनाथन के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करते हुए उनके जीवन शिक्षण और व्यक्तित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस मौके पर डॉ. अशोक कुमार, डॉ. सौरभ यादव, पवन बिष्ट, नरेन्द्र झल्डियाल, संजय गौतम, पवन प्रकाश, भगत लाल, स्वाती, आरिता पंवार तथा समस्त पुस्तकालय परिवार शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

नाराज छात्रसंघ अध्यक्ष ने भूख हड़ताल शुरू की

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : गढ़वाल विवि के बीजीआर परिसर पौड़ी में आंदोलनरत छात्रों का धरना सोमवार को भी जारी रहा। छात्रसंघ अध्यक्ष ऋत्विक असवाल ने दोपहर बाद भूख हड़ताल शुरू कर दी।

सोमवार को पौड़ी परिसर में आंदोलनरत छात्र नेताओं ने कॉलेज के मुख्य गेट पर तालेबंदी कर दी। आंदोलनरत छात्र नेता मुख्य गेट पर ही धरने पर बैठ गए। इस बीच सूचना आई कि विवि प्रशासन की श्रीनगर से एक टीम आंदोलनरत छात्रों से वार्ता के लिए पौड़ी परिसर में आ रही है, लेकिन टीम के नहीं आने से नाराज छात्रसंघ अध्यक्ष ने भूख हड़ताल शुरू कर दी।

आजादी के महोत्सव की तैयारी, घर-घर लहराएगा तिरंगा

नगर निगम की ओर से बुद्धापार्क में चलाया गया हस्ताक्षर अभियान

आजादी के महोत्सव को लेकर निगम की ओर से चलाया जा रहा हस्ताक्षर अभियान

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : आजादी के महोत्सव को लेकर नगर निगम ने भी तैयारियां तेज कर दी हैं। नगर निगम की ओर से घर-घर तिरंगा लगाने के लिए आमजन को प्रेरित किया जा रहा है। इसके तहत जहां बुद्धापार्क में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया, वहीं सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया है। जहां बड़ी संख्या में युवा व स्कूली बच्चे पहुंच रहे है। साथ ही लाउड स्पीकर में देश भक्ति गीत भी चलाए जा रहे हैं। आजादी के अमृत महोत्सव पर घर-घर तिरंगा लहराने के लिए कोटद्वार बाजार भी तैयार हो चुका है। बाजार में तिरंगे की जमकर बिक्री हो रही है। यही नहीं तिरंगे की चूड़ी, टी-शर्ट, बैंड व अन्य सामान की भी लगातार डिमांड बढ़ रही है। महोत्सव को लेकर सबसे अधिक उत्साह स्कूली बच्चों में बना हुआ है। स्कूलों में भी अमृत महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से की जा रही है। तीन दिन बाद 15 अगस्त को देशवासी आजादी का महोत्सव मनाएंगें। हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने के लिए बाजार में विभिन्न प्रकार के तिरंगे झंडे व अन्य आइटम उपलब्ध हैं। बाजार में अधिकांश दुकानों में तिरंगे सज रहे हैं। टी-शर्ट से लेकर टोपी, तीन रंगों में सजी नजर आ रही है। गले में डालने वाली तिरंगे की पट्टियां भी लोगों को खूब पसंद आ रही है। बाजार में कपड़े से लेकर कागज के तिरंगे खूब बिक रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हर घर तिरंगा अभियान से जुड़ने के लिए सबसे अधिक उत्साह युवाओं में बना हुआ है। बाजार में भी तिरंगा खरीदने वालों में सबसे अधिक संख्या बच्चों व युवाओं की ही है।

युवक पर चाकू से किया हमला, घायल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : बुद्धापार्क के समीप कुछ युवकों ने एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया। युवक को स्थानीय लोगों ने राजकीय बेस चिकित्सालय में भर्ती करवाया।

घटना रविवार देर शाम की है। कुंभीचौड़ निवासी नीरज बुद्धा पार्क के समीप घूम रहा था। इसी दौरान कुछ युवक उसके समीप पहुंचे और उसके गाली-गलौच करने लगे। विरोध करने पर युवकों ने नीरज पर चाकू से हमला किया और फरार हो गए। आसपास मौजूद लोग निजी वाहन से घायल नीरज को अस्पताल लेकर पहुंचे। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि युवक पैसे के लेन-देन को लेकर विवाद कर रहे थे। देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ा कि हाथापाई होने लगी और युवकों ने नीरज पर चाकू मार दिया।

शहर की समस्याओं पर भड़का उक्रांद, जल्द निराकरण की मांग

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : शहर में लगातार बढ़ रही समस्याओं पर उत्तराखंड क्रांति दल ने रोष व्यक्त किया है। कहा कि कोटद्वार नगर निगम बनने के बाद समस्याएं सबसे अधिक बढ़ी हैं। समस्याएं उठाने के बाद भी नगर निगम व स्थानीय प्रशासन इनके निराकरण को गंभीरता नहीं दिखा रहा। ऐसे में उक्रांद ने जल्द समस्याओं का निराकरण नहीं होने पर आंदोलन की भी चेतावनी दी। कहा कि जनता की अनदेखी किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सोमवार को उत्तराखंड क्रांति दल के कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया। दल के संरक्षक व मार्गदर्शक बोर्ड के अध्यक्ष डा. शक्ति शैल कपरवाण ने कहा कि निगम गठन के दौरान सरकार ने शहरवासियों को बड़े-बड़े विकास के सपने दिखाए थे। लेकिन, आज यह समस्याएं लगातार विकराल होती जा रही हैं। इनके निराकरण के लिए सरकार गंभीरता नहीं दिखा रही है। शहर की सड़कें गड्ढों में खो रही है। आधुनिक बस अड्डे के नाम पर मोटर नगर में दशकों बाद भी केवल एक गड्ढा ही नजर आ रहा है। कूड़ा निस्तारण की बेहतर व्यवस्था नहीं होने से शहर वासियों को संक्रामक बीमारियों का खतरा बना हुआ है। दशकों पूर्व बिछाई गई बूढ़ी पेयजल लाइनों की मरम्मत के लिए भी गंभीरता नहीं दिखाई जा रही है। निगम बनने के बाद बिजली व पानी के बिलों में भी बढ़ोत्तरी कर दी गई है। ऐसे में सबसे अधिक परेशानी गरीब परिवारों को हो रही है। शहर की सड़कों पर लगातार बढ़ रहे गोवंश राहगिरों के लिए मुसीबत बन रहे हैं। पूर्व में आश्वासन के बाद भी निगम व प्रशासन इनके संरक्षण को लेकर गंभीरता नहीं दिखा रहा। इस मौके पर महानगर अध्यक्ष पुष्कर सिंह रावत, महेंद्र सिंह रावत, सत्य प्रकाश भारद्वाज, सत्यपाल सिंह नेगी, रामचंद्र सिंह नेगी, ओमप्रकाश घनशेला, सतपाल नेगी, भारत मोहन काला, गुलाब सिंह रावत आदि मौजूद रहे।

एक सितंबर से धरना देंगे ठगी पीड़ित परिवार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : लाख शिकायतों के बाद भी ठगी का पैसा वापस नहीं मिलने से आक्रोशित पीएसीएल ठगी पीड़ित निवेशकों ने एक सितंबर से धरने की चेतावनी दी है। कहा कि कानून बनने के बाद भी पैसा नहीं मिलने से परिवारों में रोष बना हुआ है।

सोमवार को पीड़ित निवेशक संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखेदव शास्त्री के नेतृत्व में तहसील में एकत्रित हुए। यहां से उन्होंने पीड़ितों के भुगतान के संबंध में उपजिलाधिकारी के माध्यम से जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन प्रेषित किया।

ज्ञापन में बताया गया है कि संसद ने सर्वसम्मति से वर्ष 2019 में अनियमित जमा योजनाएं पाबंदी कानून 2019 बनाकर ठग कम्पनीज और ठग सोसाइटीज में डूबी हुई जमा राशि को पीड़ित आवेदक को 180 दिन में वापस दिलाने का कानूनी अधिकार दिया था।

सरकार ने कानून बनाकर जनता को यह विश्वास दिलाया था कि सरकार उनका ठगा गया धन वापस करेगी और दोषी संचालको को दण्डित करेगी। ज्ञापन में भुगतान शिविर के माध्यम से ठगी पीड़ितों की जमाराशि का भुगतान 30 अगस्त तक करने की मांग की गई है। ऐसा न होने पर 1 सितंबर से तहसील में धरना प्रदर्शन करने की चेतावनी दी गई है। ज्ञापन प्रेषित करने वालों में मुकेश चन्द्र बड़थ्वाल, गजे सिंह रावत, लक्ष्मी बिष्ट, चमेली देवी, विजयलक्ष्मी देवी और आरती देवी आदि थे।

गढ़वाल विवि में 14 अगस्त को लगेगी फोटो प्रदर्शनी

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि में तीन दिनों तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. महावीर सिंह नेगी की अध्यक्षता में सोमवार को बैठक आयोजित हुई। जिसमें 13 अगस्त को भारत सरकार के 'हर घर तिरंगा कार्यक्रम, 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस और 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस कार्यक्रम को भव्य रूप से मनाने की रूपरेखा तैयार की गई। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. महावीर सिंह नेगी ने बताया कि हर घर तिरंगा कार्यक्रम में 13 अगस्त को चौरास परिसर में डॉ. ब्रिजेश गांगिल के संयोजन में तिरंगा रैली का आयोजन किया जाएगा। वहीं बिड़ला परिसर में 15 अगस्त को प्रो. रमा मैखुरी के संयोजन में भव्य तिरंगा रैली आयोजित होगी।

नशे से दूर रहकर बेहतर भविष्य पर ध्यान दें विद्यार्थी

विद्यालय में नशे से दूर रहने का संकल्प लेते विद्यार्थी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : नशामुक्ति भारत अभियान के तहत पब्लिक इंटर कॉलेज सुरखेत के विद्यार्थियों को नशे के प्रति जागरूक किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों ने नशे से दूर रहकर बेहतर भविष्य पर ध्यान देने का संकल्प लिया। विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने की शपथ दिलाते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य पुष्कर सिंह नेगी ने जानकारी देते हुए कहा कि नशा एक सामाजिक बुराई है। नशे के कारण आज कई परिवार बर्बादी की कगार पर पहुंच गए हैं। कहा कि भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 2020 को नशामुक्त भारत अभियान की शुरुआत की गई। आगामी 78वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर नशामुक्त भारत अभियान अपने पांच वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस वर्ष का विषय ह्यविकसित भारत का मंत्र ह्याभारत हो नशे से स्वतंत्रह्न है। उन्होंने कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा होती है। युवाओं की शक्ति का समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि युवाओं को नशामुक्त भारत अभियान से जोड़कर उनकी असीम ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लगाया जा सके। इस अवसर पर विद्यालय में नशामुक्त भारत अभियान पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जूनियर वर्ग और सीनियर वर्ग के विजेता प्रतिभागियों को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा।

तुलसी जयंती पर किया सुंदरकांड का पाठ

सुंदरकांड का पाठ करते संस्था के सदस्य

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : देव भूमि उत्कर्ष सेवा समिति एवं गेप्स संस्था के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को पदमपुर मोटाढाक में क्षेत्र की सुख समृद्धि के लिए सुंदरकांड का पाठ किया गया। पाठ का आरंभ भगवान श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण कर स्वस्ति वाचन के साथ किया गया।

वक्ताओं ने भगवान श्रीराम के आदर्शों पर चलने के लिए भक्तजनों को प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान समिति सदस्य कमला नौटियाल एवं डॉक्टर चंद्रमोहन बड़थ्वाल को स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया गया। इस दौरान राम भरोसा कंडवाल, नीरजा गौड़, रेखा ध्यानी, सोम प्रभा कंडवाल, कमला नौटियाल, दिनेश चौधरी, जगत सिंह नेगी, मनमोहन काला सहित संस्था से जुड़े सभी सदस्य मौजूद रहे।

पौधा लगाने के साथ उसकी देखभाल भी हमारी जिम्मेदारी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सेवानिवृत वन अधिकारी और कर्मचारी कल्याण समिति की ओर से बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाए जा रहे अभियानों पर भी चर्चा की। कहा कि पौधा लगाने के साथ-साथ हमारी जिम्मेदारी उसे बड़ा करने की भी है। सोमवार को पनियाली स्थित अरण्य सभागार में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समिति द्वारा अब तक किए गए कार्यों पर भी चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रमोद डोबरियाल ने की। समिति के अध्यक्ष आरपी पंत ने कहा कि समिति का गठन वन विभाग से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों की समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से किया गया है। साथ ही समिति वन विभाग के साथ मिलकर कई स्थानों पर पौध रोपण कर अपना सामाजिक दायित्व भी निभा रही है। इसके अंतर्गत समिति की ओर से गुरू गोरखनाथ व महाबगढ़ आदि स्थानों पर पौध रोपण किया गया है। कहा कि समिति उपरोक्त कार्यों को भविष्य में भी जारी रखेगी। बैठक में केशीराम निराला, रफीक खान, चंद्र किशोर असवाल, सुरेश मधवाल, दिनेश घिल्डियाल और आरपी जोशी सहित समिति के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

प्रदेश की रस्सा-कस्सी टीम में प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों का किया स्वागत

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : प्रदेश की रस्सा-कस्सी टीम में प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों का एमकेवीएन इंटरनेशनल विद्यालय की ओर से स्वागत किया गया। प्रतियोगिता में बालिका वर्ग की टीम में विद्यालय की छात्रा अनन्या असवाल व आरोशी के साथ ही बालक वर्ग में आयुष बिष्ट, आरव, निर्मल, स्वास्तिक नेगी और कृष्णा सिंह ने प्रतिभाग किया। उत्तर प्रदेश आगरा कैंट टग आफ वार फेडरेशन आफ इंडियाल की ओर से सब जूनियर अंडर-13 राष्ट्रीय टग आफ वार रस्सा-कस्सी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। जिसमें प्रदेश की टीम में कण्वनगर कोटद्वार स्थित एमकेवीएन इंटरनेशनल स्कूल शिब्बूनगर की दो छात्रा अनन्या असवाल व आरोशी ने भी प्रतिनिधित्व किया। विद्यालय के कार्यकारी निदेशक मयंक प्रकाश कोठारी ने बताया कि प्रतियोगिता में बीस राज्यों की 93 टीमों ने प्रतिभाग किया था। खेल कौशल एवं शरीरिक मजबूती का प्रदर्शन करते हुए उत्तराखंड की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में छात्रा अनन्या व आरोशी ने भी बेहतर प्रदर्शन किया। विद्यालय ने विद्यार्थियों का माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। वहीं, बालक वर्ग अंडर-13 में प्रदेश की टीम से विद्यालय के आयुष बिष्ट, आरव, निर्मल, स्वास्तिक नेगी और कृष्णा सिंह ने भी शानदार प्रदर्शन किया। बालकों की टीम चर्तुथ स्थान पर रही। इस मौके पर विद्यालय के निदेशक चंद्र प्रकाश कोठारी, प्रधानाचार्य संजय जोशी, कोच पूनम गुसांई, आरिफा, मंजू असवाल, ममता नेगी आदि मौजूद रहे।

छात्रों को दी बेसिक लाइफ सपोर्ट व प्राथमिक उपचार की जानकारी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : आर्मी पब्लिक स्कूल लैंसडाउन में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में छात्रों को बेसिक लाइफ सपोर्ट और प्राथमिक उपचार की जानकारी दी गई। इस दौरान विद्यार्थियों को जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए भी प्रेरित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ स्कूल के चेयरमैन ब्रिगेडियर विनोद सिंह नेगी ने किया। तत्पश्चात सीओ मिलिट्री हास्पिटल लेफ्टिनेंट कर्नल हरनीत कौर व मेजर रोबिन ने छात्रों को पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से बेसिक लाइफ सपोर्ट और प्राथमिक उपचार पर जानकारी देते हुए बताया कि यह प्रक्रिया तब शुरू की जाती है जब किसी व्यक्ति को अचानक हृदयघात का अनुभव होता है। साथ ही यह प्रक्रिया आपातकालीन स्थिति का सामना कर रहे व्यक्तियों को तत्काल चिकित्सा प्रदान करने के लिए भी अपनाई जाती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से हम और लोगों का जीवन बचा सकते हैं। अंत में प्रधानाचार्य विजेन्द्र दत्त सुंद्रियाल ने सीओ और उनकी टीम का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि जीवन कौशल प्रशिक्षण से कभी भी, किसी भी समय, किसी की भी जिंदगी बचाई जा सकती है। इस दौरान विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

डीएम ने तीन अधिकारियों का रोका वेतन, चार अधिकारियों का किया स्पष्टीकरण तलब

बीस सूत्रीय कार्यक्रम में खराब स्थिति को लेकर जताई नाराजगी

डीएम डॉ. आशीष चौहान बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते हुए।

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने जिला कार्यालय सभागार में विकासीय योजनाओं की समीक्षा बैठक लेते हुए बीस सूत्रीय कार्यक्रम में खराब स्थिति को लेकर गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने जिला प्रोबेशन अधिकारी व मुख्य चिकित्साधिकारी के वेतन रोकने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा बैठक में प्रतिभाग नहीं करने व जिला योजना में आवंटित धनराशि के सापेक्ष न्यूनतम व्यय किये जाने को लेकर वेतन रोकने के निर्देश दिये, जबकि जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, अधिशासी अभियन्ता विद्युत, जिला पंचायतराज अधिकारी द्वारा बैठक में प्रतिभाग नहीं करने पर स्पष्टीकरण तलब किया है।

सोमवार को आयोजित राज्य सेक्टर, जिला योजना व बीस सूत्री कार्यक्रम की समीक्षा बैठक में स्वास्थ्य विभाग की 5 योजनाएं/मदें 'डी' श्रेणी में व 1 मद 'सी' श्रेणी में पाये जाने पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी के वेतन रोकने के निर्देश दिये हैं। बाल विकास विभाग की तीन योजनाएं/मदें बी श्रेणी में तथा दो योजनाएं 'सी' श्रेणी में पाये जाने पर जिलाधिकारी ने जिला प्रोबेशन अधिकारी के वेतन रोकने के निर्देश दिये हैं। बी, सी व डी श्रेणी की मदों/योजनाओं को 'ए' श्रेणी में लाने व मदों की निरंतर समीक्षा हेतु जिलाधिकारी ने प्रशिक्षु आईएएस दीक्षिका जोशी की अध्यक्षता में एक टास्क फोर्स समिति का गठन करने को कहा। लोक निर्माण विभाग की जिला योजना में व्यय की खराब स्थिति को लेकर जिलाधिकारी ने सख्त हिदायत देते हुए 15 दिन के भीतर वित्तीय प्रगति लाने के निर्देश दिये हैं। राजकीय सिंचाई, जल संस्थान, वन विभाग, सिंचाई, कृषि विभाग को लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति लाने को कहा है। बैठक में अर्थ एवं संख्या विभाग द्वारा योजनाओं की वित्तीय प्रगति के आंकडे प्रस्तुत करते हुए बताया कि जिला सेक्टर योजना में जुलाई माह में अवमुक्त धनराशि के सापेक्ष व्यय प्रतिशत 3.68, राज्य सैक्टर योजना में 54.72 प्रतिशत, जबकि केन्द्र पोषित योजना में 76.77 प्रतिशत धनराशि व्यय की जा चुकी है। बैठक में जिला विकास अधिकारी मनविन्दर कौर, जिला प्रोबेशन अधिकारी देवेन्द्र थपलियाल, प्रभारी मुख्य शिक्षाधिकारी नागेन्द्र बर्तवाल, ईई जल संस्थान एसके रॉय, ईई लोनिवि दिनेश बिजल्वांण, मत्य अधिकारी अभिषेक मिश्रा, अपर संख्याधिकारी वीरेन्द्र नगी व रंजीत रावत एसडीओ वन विभाग आईशा बिष्ट सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

यूजी में प्रवेश के लिए 16 अगस्त को जारी होगी पहली लिस्ट

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि में स्नातक कोर्सों में प्रवेश लेने के लिए पंजीकरण प्रक्रिया संपन्न हो गई है। गढ़वाल विवि को 14121 छात्र-छात्राओं के आवेदन प्राप्त हुए हैं। गढ़वाल विवि ने एनटीए की ओर से आयोजित सीयूईटी परीक्षा में सम्मलित छात्र-छात्राओं के लिए 2 अगस्त से 11 अगस्त तक यूजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए समर्थ पोर्टल पर पंजीकरण मांगे थे। जिसमें गढ़वाल विवि को अपने तीन परिसरों और सम्बद्ध महाविद्यालयों के लिए 14121 छात्र-छात्राओं ने पंजीकरण किया है। गढ़वाल विवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. महावीर सिंह नेगी ने बताया कि विवि में यूजी के 32 कोर्सों के लिए 9244 छात्र-छात्राओं ने पंजीकरण किया है। जबकि गढ़वाल विवि से 15 सम्बद्ध महाविद्यालयों में 4877 ने पंजीकरण किया है। उन्होंने बताया कि गढ़वाल विवि में कुल 14121 छात्र-छात्राओं ने अपना पंजीकरण किया है। बताया कि 16 अगस्त तक छात्रों की पहली लिस्ट जारी कर दी जायेगी। जिसको लेकर डीएसडब्ल्यू बोर्ड आगे की कार्यवाही में जुट गया है। प्रो. नेगी ने बताया कि सीयूईटी प्रवेश परीक्षा में जिन छात्रों ने गलत विषयों का चयन किया है, उनके लिए गढ़वाल विवि पंजीकरण के लिए पोर्टल खोलेगा। कहा कि प्रवेश प्रक्रिया संपन्न होने के बाद यदि सीटें रिक्त रहती हैं तो उन पर सीयूईटी परीक्षा देने से वंचित रह गये छात्र-छात्राओं को मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। (एजेंसी)

डीएम ने सुनी सेवानिवृत्त कर्मचारियों की समस्याएं

डीएम डॉ. आशीष चौहान शिविर में सेवानिवृत्त कर्मचारी की समस्या सुनते हुए।

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : सेवानिवृत कार्मिकों के लंबित पेंशन प्रकरणों के निराकरण को लेकर जिला कार्यालय स्थित एनआईसी कक्ष में जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान की अध्यक्षता में शिविर का आयोजन किया गया। पेंशन निराकरण शिविर में विभिन्न विभागों से सेवानिवृत कार्मिकों के कुल 12 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 02 पेंशन प्रकरण, जबकि 10 राज्य स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत बनने वाले गोल्डन कार्ड से सम्बन्धित थे।

जिलाधिकारी ने सभी विभागों के आहरण वितरण अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिला स्तरीय कार्मिकों के सेवानिवृत होने के छः माह के भीतर पेंशन प्रपत्रों सम्बंधी कार्यवाही करते हुए पेंशन का लाभ देना सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि विभागीय स्तर पर पेंशन प्रकरण के 06 माह अधिक अवधि तक लंबित पाये जाने पर सम्बंधित विभाग के आहरण-वितरण अधिकारी की जवाबदेही तय की जायेगी। गोल्डन कार्ड की पात्रता सम्बंधी प्रकरणों पर जिलाधिकारी ने कहा कि इस सम्बंध में शासन स्तर पर पत्राचार करने के उपरान्त ही प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुरुप अग्रिम कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। उन्होंने पेंशन प्रकरण से संबंधित मुख्य शिक्षाधिकारी को एक सप्ताह में संबंधित सेवानिवृत कार्मिक को पेंशन का लाभ देने के निर्देश दिये। शिविर में प्रशिक्षु आईएएस दीक्षिता जोशी, मुख्य कोषाधिकारी गिरीश चंद, मुख्य शिक्षाधिकारी नागेंद्र बर्तवाल व पेंशनर सुरेश चंद्र बड़थ्वाल, उत्तम नेगी व अन्य फरियादी उपस्थित थे।

यूजी पंजीकरण प्रक्रिया को विस्तारित करने की उठाई मांग

श्रीनगर गढ़वाल : आइसा छात्र संगठन ने गढ़वाल विवि में चल रही यूजी में प्रवेश के लिए पंजीकरण प्रक्रिया को विस्तारित किए जाने की मांग की है। सोमवार को विभिन्न मांगों को लेकर आइसा छात्र संगठन गढ़वाल विवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. महावीर सिंह नेगी से मिले। इस दौरान आइसा नगर अध्यक्ष प्रियंका खत्री ने कहा कि अधिकांश छात्र सीयूईटी यूजी परीक्षा में सही विषय संयोजन नहीं भर पाए हैं। जिस कारण वह पंजीकरण प्रक्रिया में प्रतिभाग नही कर पा रहे हैं। आइसा ने पंजीकरण प्रक्रिया समाप्त होने के बाद फार्म भरने में हुई गलतियों को सुधारने के लिए छात्रों को मौका दिए जाने और प्रवेश प्रक्रिया संपन्न होने के पश्चात रिक्त सीटों पर सीयूईटी प्रवेश परीक्षा से वंचित छात्र-छात्राओं को भी मेरिट के आधार पर प्रवेश दिये जाने की मांग की है।

पुनर्गठन पर 16 अगस्त तक दर्ज कराएं आपत्तियां

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिलाधिकारी गढ़वाल डॉ. आशीष चौहान द्वारा जारी कार्यालय ज्ञाप के माध्यम से ग्राम पंचायतों के पुर्नगठन एवं परिसिमन को लेकर शासन के निर्देशों के क्रम में विकासखंड एवं जिला मुख्यालय स्तर पर ग्राम पंचायतों के पुर्नगठन संबंधि प्राप्त प्रस्तावों पर परीक्षण के उपरांत विकासखंड वार अनंतिम सूची का प्रकाशन किया गया है। उन्होंने समस्त हितबद्ध व्यक्ति/व्यक्तियों से अनुरोध किया है कि यदि ग्राम पंचायत के पुर्नगठन पर कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्तियां 14 से 16 अगस्त के बीच किसी भी कार्य दिवस में संबंधित खंड विकास कार्यालय, जिला पंचायतीराज अधिकारी कार्यालय या जिलाधिकारी में लिखित रूप से दर्ज करा सकते हैं।

प्राप्त आपत्तियों का शासन द्वारा गठित समिति के द्वारा निर्धारित तिथि 21 अगस्त को पूर्वाह्न 11 बजे से विकास भवन सभागार में निस्तारण/सुनवाई की जाएगी। जनपद पौड़ी गढ़वाल के अन्तर्गत त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों से पूर्व ग्राम पंचायतो के पुनर्गठन/परिसीमन हेतु जनपद स्तर पर 07 अगस्त 2024 तक कुल 61 प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। जिसमें से 16 प्रस्ताव एक विकासखंड से दूसरे विकासखंड में ग्राम पंचायतों को शामिल करने हेतु प्राप्त हुए थे जिन्हे शासन स्तर को प्रेषित किया जाना है। जबकि 04 राजस्व ग्रामों को दूसरी ग्राम पंचायतों में सम्मिलित करने हेतु प्रस्ताव प्राप्त हुए है। जिसमें से विकासखंड कोट के ग्राम पंचायत ढुंगली से राजस्व ग्राम नाई को ग्राम पंचायत लीई में सम्मिलित करने, विकासखंड जयहरीखाल के ग्राम पंचायत असनखेत से राजस्व ग्राम अलजुणी को ग्राम पंचायत पडेरगांव में सम्मिलित करने, विकासखंड नैनीडांडा के अन्तर्गत ग्राम पंचायत डोभा से राजस्व ग्राम दौरी को ग्राम पंचायत बसोली में सम्मिलित करने व विकासखंड एकेश्वर के अन्तर्गत ग्राम पंचाय ईडा मल्ला से राजस्व ग्राम सीला को ग्राम पंचायत मोल्ठी में सम्मिलित करने संबंधी प्रस्ताव शामिल है। 2 प्रस्ताव ग्राम पंचायतों नाम परिवर्तन हेतु प्राप्त हुए है जिसमें विकासखंड पौड़ी के ग्राम पंचायत बुडोली का नाम परिवर्तन कर ग्राम पंचायत थपलियालगांव करने व विकास खण्ड खिर्सू के अन्तर्गत ग्राम पंचायत कोल्ठा का नाम परिवर्तन कर ग्राम पंचायत भैंसकोट करने का प्रस्ताव शामिल है।

एक नजर

पुलिस कर्मियों ने ली नशा मुक्त भारत की शपथ

चमोली : नशा मुक्त भारत अभियान के 5 वर्ष पूरे होने पर सोमवार चमोली जिले के समस्त पुलिस कर्मियों ने नशा मुक्ति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए शपथ ली। पुलिस कार्यालय गोपेश्वर में पुलिस उपाधीक्षक प्रमोद शाह और कोतवाली जोशीमठ में पुलिस उपाधीक्षक अमित सैनी ने पुलिस कर्मियों के साथ नशे के खतरे के बारे में जागरूकता फैलाने और नशे की लत से जूझ रहे व्यक्तियों की मदद करने की प्रतिज्ञा दिलाई। कहा पुलिस कर्मी समाज के लिए एक उदाहरण हैं। नशे से स्वयं दूर रहने और समाज को भी इससे दूर रहने के संकल्प और मिशन से एक बेहतरीन समाज बनाया जा सकता है। यह संकल्प समाज को नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ लड़ाई में एकजुट होने के लिए प्रेरित करेगा। पुलिस उपाधीक्षक अमित सैनी और प्रमोद शाह ने कहा नशा मुक्त भारत अभियान की शुरुआत के बाद से नशीली दवाओं के तस्करी को रोकने, नशे की लत के उपचार सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाने और युवाओं को नशे के खतरों के बारे में शिक्षित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। उद्देश्य एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाना है जहां व्यक्तियों को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने का अवसर मिले। (एजेंसी)

विधानसभा सत्र को लेकर जागा एनएच प्रशासन

चमोली : आगामी 21 से 23 अगस्त तक गैरसैंण के भराड़ीसैंण में आयोजित होने वाले विधान सभा सत्र की देखते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण शाखा रुद्रप्रयाग हरकत में आ गया है। कर्णप्रयाग से पांडुवाखाल तक नैनीताल राष्ट्रीय राजमार्ग 109 पर स्थान स्थान पर पेंच वर्क तथा मरम्मत का कार्य गतिमान है। वही इसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर मेहलचौरी में वर्ष 1963 में बने पुल का भी मरम्मत कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। (एजेंसी)

देशी पिस्टल के साथ एक गिरफ्तार

नई टिहरी : थाना कैम्पटी पुलिस ने देशी पिस्टल के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। कैम्पटी पुलिस के चलाये जा रहे गहन चेकिंग अभियान के दौरान एसआई आनंद सिंह रावत ने कैम्पटी वाहन पार्किंग के अन्तिम छोर से ख्यार्सी बैंड की तरफ आरोपी 25 वर्षीय विश्वास पुत्र राजपाल निवासी अलीशेरपूर थाना बिलासपुर यमुनानगर हरियाणा को एक 32 बोर की देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ शस्त्र अधिनियम में मामला दर्ज किया गया है।

नव प्रवेशित छात्रों का किया स्वागत

श्रीनगर गढ़वाल : राजकीय पॉलीटेक्निक श्रीनगर ने नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए ओरियेंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। बतौर मुख्य अतिथि पॉलीटेक्निक श्रीनगर की प्रधानाचार्य सरिता कटियार ने नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं का स्वागत करते हुए उन्हें मेहनत, लग्न, समर्पण एवं अनुशासन के साथ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। मौके पर एकेडमिक ऑफिसर डा. भारती विश्वकर्मा, सीमा रावत, जितेंद्र कुंवर, विवेक गोपाल, अरशुतोष नौटियाल सहित आदि मौजूद थे। मंच का संचालन अनिल शाह ने किया। (एजेंसी)

घर से निकली युवती लापता

देहरादून। कॉलेज जाने की बात कहकर घर से निकली युवती घर वापस नहीं आई। युवती की मां ने एक युवक पर शक जताते हुए अपहरण का मुकदमा दर्ज कराया है। रायपुर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार युवती के परिवार वालों ने शोएब नाम के युवक के खिलाफ वर्ष 2019 में दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया था। उस वक्त पीड़िता नाबालिग थी। शोएब पर आरोप था कि उसने पीड़िता से दुष्कर्म किया और ब्लैकमेल कर पैसे लिए। यह मुकदमा अदालत में चल रहा है। अब पीड़िता की मां का कहना है कि पांच अगस्त को उन्होंने मुकदमे में अपने बयान दर्ज कराए थे।

दून जू में विश्व हाथी दिवस मनाया

देहरादून। दून जू में सोमवार को जन-जागरूकता अभियान के साथ विश्व हाथी दिवस मनाया गया। इस दौरान लोगों के साथ स्कूली बच्चों के लिए भी कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। जू इंचार्ज रेंजर विनोद लिंगवाल ने बताया कि हाथी संरक्षण के बारे में आगंतुकों को शिक्षा देने और प्रेरित करने के लिए जू परिसर में विभिन्न स्थानों पर सेल्फी प्वाइंट्स बूथस लगाए थे। जहां पर पर्यटकों ने काफी उत्साह के साथ फोटो खिंचवायी। इस दौरान जू निदेशक डीएफओ नीरज शर्मा ने भी हाथियों के संरक्षण के बारे में लोगों को बताया।

सड़क सुरक्षा से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करें : एडीएम

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश ने सोमवार को वीसी के माध्यम से सड़क सुरक्षा समिति की बैठक ली। उन्होंने निर्देशित किया कि सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम एवं सुरक्षित यातायात के लिए सड़क सुरक्षा से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता पर पूरा किया जाए। कर्णप्रयाग अस्पताल में सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को समय पर उपचार न मिलने के एक मामले में उन्होंने अस्पताल प्रशासन से स्पष्टीकरण भी तलब किया। अपर जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि पिछले तीन माह में जिन स्थानों पर वाहन दुर्घटना हुई है वहां पर क्रैश बैरियर, रिफ्लेक्टर, साइनेज लगाने के साथ ही सड़क सुधारीकरण के सभी कार्य सुनिश्चित किए जाए। बरसात के कारण सड़कों पर पड़े गढडों को तत्काल पैच वर्क करके ठीक कराया जाए। सड़क निर्माणदायी संस्थाएं अपनी सड़कों का रेग्यूलर निरीक्षण करें। सुरक्षित यातायात के लिए संकरे मार्ग, भूस्खलन क्षेत्र एवं अन्य संवेदनशील स्थानों पर क्रैश बैरियर व साइनेज लगाए जाए। सेफ्टी के अन्तर्गत चिन्हित ब्लैक स्पॉटों का सुधारीकरण हेतु अवशेष कार्यों को तत्काल पूरा किया जाए। संयुक्त निरीक्षण में सड़क दुर्घटनाओं के जो कारण सामने आए है उनका शीघ्र समाधान किया जाए। रोड़ सेफ्टी आडिट के अवशेष कार्यों को भी जल्द से जल्द पूरा करें। अपर जिलाधिकारी ने कहा कि एसडीएम, पुलिस एवं परिवहन विभाग अभियान चलाकर सड़क सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ चालान की सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करें। ओवर स्पीड, ओवर लोडिंग और ड्रंक एंड ड्राइव की रोकथाम के लिए सघन चेकिंग करते हुए चालान की कार्रवाई की जाए।

विधायक ने किया पंचायत भवन का लोकार्पण

विधायक राजकुमार पोरी पंचायत भवन का लोकार्पण करते हुए।

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : विधायक राजकुमार पोरी ने कल्जीखाल विकास खंड के अन्तर्गत ग्राम पंचायत थनुल पहुंच कर पूर्व प्रधान स्वर्गीय कैप्टन नरेंद्र सिंह नेगी की प्रथम पुण्य तिथि पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। विधायक ने नेगी के कार्यकाल में बने पंचायत भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विधायक ने पंचायत भवन के लिए भूमि दान देने के लिए वीरेंद्र सिंह नेगी को सम्मानित किया। सामाजिक कार्यकर्ता जगमोहन डांगी ने बताया कि दिवंगत प्रधान स्वर्गीय नरेंद्र सिंह नेगी ने दो साल कोविड काल के बावजूद अल्प समय में भी अपनी ग्राम पंचायत में पंचायत भवन, सड़क, कृषि विभाग से उपजाऊ भूमि पर घेरबाड आदि इतिहासिक कार्य किए जो सदा स्मरणीय रहेंगे। इस मौके पर पूर्व सांसद प्रतिनिधि ओम प्रकाश जुगरान, विधायक प्रतिनिधि मनोज, ग्राम प्रधान विजय लक्ष्मी देवी, सामाजिक कार्यकर्ता जगमोहन दांगी, मनमोहन रावत, रवींद्र रावत आदि उपस्थित रहे।

नशा छात्रों के लिए दीमक के समान : एएसपी

नई टिहरी : गढ़वाल विवि के स्वामी रामतीर्थ परिसर बादशाहीथौल में सोमवार को नशा उन्मूलन को लेकर गोष्ठी का आयोजन किया गया। आयोजित गोष्ठी में एएसपी जेआर जोशी ने कहा कि छात्रों के जीवन में नशा दीमक के समान है। जो कि जीवन को खत्म करने का काम करता है।

इसलिए छात्र नशे को हतोत्साहित करने का काम करें। गोष्ठी में एएसपी जोशी ने कहा कि युवा छात्र जोश में गलत संगत के कारण नशे की ओर चल पड़ते हैं। जिसका खामियाजा उन्हें नहीं बल्कि उनके परिजनों व रिश्ते-नातेदारों को भुगतान होता है। इसलिए हरहाल में दूर रहकर जीवन को संयमित बनाने का काम करें। नशे कारोबारियों की जानकारी व इसके नुकसान की गहन जानकारी रखें। इससे नशे के बचने में मदद मिलेगी। कहा कि किसी भी युवा छात्र को नशे के कारोबारी या नशे में लिप्त छात्र मिलते हैं, तो उसकी जानकारी पुलिस को दें।

जानकारी देने वाले के नाम का कभी खुलासा नहीं किया जाता है। पुलिस हेल्प लाईन नंबर की हमेशा मदद लें। इस अवसर पर प्रभारी परिसर निदेशक डा. रविंद्र सिंह ने एएसपी पुलिस सहित पुलिस प्रशासन तथा थाना चंबा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं को बहु उपयोगी नशा उन्मूलन की जानकारी देकर जागरूक किया गया है। जिससे छात्रों में जारूकता बढ़ेगी। जिसका लाभ उन्हें मिलेगा। जिसके बाद एएसपी ने सभी छात्रों और स्टाफ नशा उन्मूलन की शपथ भी दिलाई।

सोनप्रयाग में हाईवे के 150 मीटर क्षतिग्रस्त भाग पर आवाजाही शुरू

रुद्रप्रयाग : अधिशासी अभियंता राष्ट्रीय राजमार्ग निर्भय सिंह ने बताया कि सोनप्रयाग और गौरीकुंड के बीच में डेढ सौ मीटर क्षतिग्रस्त हाईवे को त्वरित गति से खुलवाने के लिए पोकलैंड मशीन द्वारा निरंतर कार्य किया गया। सोमवार दोपहर तक पोकलैंड मशीन द्वारा इस क्षेत्र में सड़क की कटिंग का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। 150 मीटर तक सड़क पर वाहनों की आवाजाही हो रही है। जबकि आगे दो स्थानों पर कार्य जारी है। अधिशासी अभियंता डीडीएमए विनय झिंक्वाण ने बताया कि यात्रा मार्ग में क्षतिग्रस्त पैदल मार्ग में कार्य जारी है। यात्रा मार्ग को ठीक करने के लिए सभी क्षतिग्रस्त स्थानों पर श्रमिकों जुटे हैं। पूरे पैदल मार्ग में 260 श्रमिक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बड़ी लिंचौली के गदेरे के पास क्षतिग्रस्त मार्ग ठीक कर दिया गया है।

जन संवाद कार्यक्रम में 24 शिकायत दर्ज, 11 का किया निराकरण

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : जिलाधिकारी सौरभ गहरवार की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में जनसंवाद/जनता मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 24 शिकायत दर्ज की गई। जिनमें 11 शिकायतों का मौके पर ही निराकरण किया गया, जबकि शेष शिकायतों का निस्तारण करने के लिए संबंधित विभागों को प्रेषित किया गया। आयोजित जनता मिलन कार्यक्रम में धारतोंदला के प्रधान देवेंद्र सिंह रावत ने राजस्व ग्राम तोंदला में हो रहे भूस्खलन के कारण आवासीय भवनों को उत्पन्न हुए खतरे की समस्या से अवगत कराया। मल्यासू के ग्रामीणों ने कोटली बांसी मोटर मार्ग निर्माण से पेयजल लाइन क्षतिग्रस्त होने की शिकायत दर्ज की। क्षेत्र पंचायत सदस्य स्यूपुरी गौरव ने स्यूपुरी गांव से राइका मुख्य मार्गों का निर्माण करने की मांग की। ढौंडिक क्यूड़ी गांव की संतोषी देवी व रोशनी देवी ने प्रधानमंत्री आवास उपलब्ध कराने की मांग की। मरोड़ा गांव के संतोष सिंह ने रेलवे द्वारा तीन वर्ष से भवन किराया नहीं दिए जाने की शिकायत दर्ज कराई। बर्सू बिलोटा गांव के देवी प्रसाद ने रेलवे द्वारा सुरंग निर्माण होने से उनके आवासीय भवन में आई दरारों क शिकायत दर्ज कराई। जन संवाद कार्यक्रम में कुल 24 शिकायतें दर्ज की गई जिनमें 11 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। वही शेष शिकायतों का निराकरण हेतु संबंधित विभागों को प्रेषित किया गया। जिलाधिकारी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि जन संवाद/जनता मिलन कार्यक्रम में जो भी शिकायतें व समस्याएं दर्ज की गई हैं उनका निराकरण एक सप्ताह अंतर्गत करना सुनिश्चित करें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिन समस्याओं पर स्थलीय निरीक्षण किया जाना है उन पर तत्काल स्थलीय निरीक्षण कर वस्तुस्थिति का तत्परता से समाधान करना सुनिश्चित करें। इसमें किसी भी प्रकार से काई ढिलाई एवं लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जो आवेदन पत्र आर्थिक सहायता से संबंधित हैं उन्हें तत्काल मुख्यमंत्री राहत कोष हेतु पत्र प्रेषित करने के निर्देश दिये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ. जीएस खाती, परियोजना निदेशक विमल कुमार, उप जिलाधिकारी रूद्रप्रयाग आशीष चंद्र घिल्डियाल, जखोली भगत सिंह फोनिया, ऊखीमठ अनिल कुमार शुक्ला,जिला समाज कल्याण अधिकारी सुनीता अरोड़ा, शिकायत प्रकोष्ट प्रभारी विनोद कुमार सहित अन्य विभागीय अधिकारी व कर्मचारी एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए ग्रामीण मौजूद रहे।

थराली और कर्णप्रयाग में गोसदन निर्माण के लिए त्वरित कार्रवाई करें : डीएम

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : जिलाधिकारी हिमांशु खुराना की अध्यक्षता में सोमवार को जनपद स्तरीय निराश्रित गोवंश समिति की बैठक हुई। जिसमें जनपद के नगर पालिका क्षेत्रों में निर्माणाधीन एवं संचालित गौ सदनों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की गई। कर्णप्रयाग नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी द्वारा गोसदन की टेंडर प्रक्रिया में देरी करने और समीक्षा बैठक में उपस्थित न रहने पर जिलाधिकारी ने ईओ का वेतन रोकने के निर्देश भी दिए।

जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि थराली और कर्णप्रयाग में गोसदन निर्माण के लिए त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। गौचर, पोखरी और पीपलकोटी में संचालित गोसदन निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा किया जाए। जोशीमठ में निर्मित गोसदन में पशुओं को शिफ्ट किया जाए। गोसदन संचालन के इच्छुक गैर सरकारी संस्थाओं से शीघ्र आवेदन प्राप्त कर उनके पंजीकरण कराया जाए। जिला स्तरीय समिति द्वारा पशु कल्याण बोर्ड को राजकीय मान्यता हेतु नारायणबगड़, कर्णप्रयाग, गोपेश्वर, पोखरी और थराली से पांच गैर सरकारी संस्थाओं (एनजीओ) के प्रस्ताव भेजे गए है। वर्तमान में सात नगर पालिका एवं नगर पंचायत क्षेत्रों में गौ सदन स्थापना की कार्रवाई गतिमान है। जनपद के दो गौ सदनों को 23 लाख की धनराशि भरण पोषण मद में उपलब्ध कराई गई है। इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी द्वारा पूर्व में नगर पालिका गौचर और गोपेश्वर में गोसदन के लिए 37.97 लाख की धनराशि उपलब्ध कराई गई थी। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि बेसहारा पशुओं को आश्रय दिए जाने हेतु मिशन मोड में गोसदन का कार्य पूर्ण करना सुनिश्चित करें। बैठक में परियोजना निदेशक आनंद सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रलयंकर नाथ, अधिशासी अधिकारी पीएस नेगी सहित वर्चुअल माध्यम से सभी तहसील से एसडीएम और नगर निकायों के अधिशासी अधिकारी उपस्थित थे।

ग्रामीणों ने योजना में गड़बड़ी की डीएम से की शिकायत

नई टिहरी : प्रतापनगर के प्रधानों सहित स्थानीय लोगों ने सोमवार को नई टिहरी के जल संस्थान पर जल जीवन मिशन की 20 गांवों की योजना में मनमाने तरीके से फर्जी भुगतान करने का आरोप लगाते हुए डीएम से गहन जांच की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि ठोस जांच न की गई तो ग्रामीण मामले में मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव को ज्ञापन देने के साथ ही न्यायालय की शरण में जाकर एसआईटी जांच की मांग करने को मजबूर होंगे। प्रतापनगर के ग्रामीणों ने डीएम मयूर दीक्षित को सौंपे ज्ञापन में आरोप लगाया है कि जल संस्थान विभाग ने जल जीवन मिशन की प्रतापनगर ब्लाक के 20 गावों की योजना करोड़ों का फर्जी भुगतान किया है। जिसकी शिकायत जन प्रतिनिधि प्रतापनगर की बीडीसी बैठक में कर चुके हैं। लेकिन अभी तक सम्बंधित अधिकारियों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। (एजेंसी)

सावन के अंतिम सोमवार को शिवालयों में उमड़े भक्त

रुद्रप्रयाग : सावन के अंतिम सोमवार को लेकर जनपद के सभी शिवालयों में भक्तों की भीड़ उमड़ी रही। बड़ी संख्या में भक्तों ने पूजा-अर्चना के साथ ही भगवान शिव का जलाभिषेक किया। इस दौरान सभी ने सुख समृद्धि की कामना की। केदारनाथ में भी स्थानीय लोगों के अलावा श्रद्धालुओं ने बाबा केदार का जलाभिषेक किया। हल्की बारिश के बीच सुबह चार बजे से ही भक्त शिव मंदिरों में दर्शन को उमड़ने लगे। सोमवार को सावन का अंतिम सोमवार होने के कारण भी शिवालयों में भक्तों की भीड़ देखी गई। पंचकेदार गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ, विश्वनाथ मंदिर गुप्तकाशी, द्वितीय केदार मद्महेश्वर, तृतीय केदार तुंगनाथ, प्रसिद्ध सिद्धपीठ कोटेश्वर महादेव के साथ ही रुद्रनाथ, पुंडेश्वर, सूर्यप्रयाग, रुच्छ महादेव, उमरानारायण, गंगतल आदि शिवालयों में भक्तों की भीड़ लगी रही। ऊं नमः शिवाय का जप करते हुए भक्तों ने भगवान शिव का जलाभिषेक किया। इधर, कई भक्तों द्वारा लम्बे समय से सावन को लेकर शिवालयों में पाठ रखा गया था। विशेष रूप से कोटेश्वर में पाठ करने वाले भक्तों की संख्या काफी रही। ऐसा माना जाता है कि सावन में शिव की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक के साथ ही पाठ, हवन आदि से भक्त की मनोकामनाएं पूर्ण होती। (एजेंसी)

तकनीशियनों के मानदेय बढ़ाने की उठाई मांग

चमोली : प्रौद्योगिकी संस्थान गोपेश्वर कोठियाल सैण के तकनीशियनों के मानदेय में वृद्धि की मांग को लेकर सोमवार को नागरिक संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी के माध्यम से तकनीकी शिक्षा मंत्री और सरकार को ज्ञापन भेजा है। नागरिक संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने प्रौद्योगिकी संस्थान गोपेश्वर कोठियाल सैण में कार्यरत तकनीशियनों का मानदेय शीघ्र बढ़ाने की मांग की है। सामाजिक कार्यकर्ता राकेश प्रसाद कोठियाल, संजय झिंक्वाण, नागरिक संगठन के विजय प्रसाद, राधा बल्लभ, राजेन्द्र सिंह ने बताया प्रौद्योगिकी संस्थान गोपेश्वर कोठियाल सैण में कार्यरत तकनीशियनों का मानदेय 9 वर्ष पूर्व 12 हजार रुपये था। आज भी तकनीशियनों को वही मानदेय दिया जा रहा है। पिछले 5 वर्षों से तकनीशियनों के मानदेय बढ़ाने की मांग अलग अलग अवसरों पर विभिन्न माध्यमों की जा रही है। सामाजिक कार्यकर्ता राकेश कोठियाल ने बताया 2018 और 2022 में शासन द्वारा विभागीय संचालन समिति में प्रस्ताव पारित कर प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, प्रधानाचार्य को तकनीशियनों का मानदेय 26,775 रुपये देने का आदेश भी जारी हो चुका है।

अभिभावकों का क्रमिक अनशन शुरू

चमोली : राजकीय अटल उत्कृष्ट इंटर कॉलेज तलवाड़ी में अध्यापकों की नियुक्ति की मांग को लेकर अभिभावकों ने सोमवार से कॉलेज परिसर में कर्मिक अनशन शुरू कर दिया हैं। पूर्व से ही निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सोमवार को कॉलेज से जुड़े अभिभावक कॉलेज परिसर में एकत्र हुए जहां शासन-प्रशासन के विरुद्ध जोरदार नारेबाजी कर धरने पर बैठ गए। अभिभावकों ने कॉलेज से पांच अध्यापकों का स्थानांतरण होने तथा उनके स्थान पर कोई प्रतिस्थानी न पहुंचने पर नाराजगी जताई गई है। अभिभावकों का कहना है जब तक अध्यापकों की नियुक्ति नहीं हो जाती तब तक कर्मिक अनशन जारी रहेगा, जल्द से जल्द मांगे पूरी नहीं होने पर सभी अभिभावक क्षेत्र की जनता के साथ आमरण अनशन करने को मजबूर होंगे।

अमृत सरोवरों को जीवंत बनाने के लिए डीएम ने दिए निर्देश

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : जिलाधिकारी हिमांशु खुराना की अध्यक्षता में सोमवार को मिशन अमृत सरोवर को लेकर बैठक हुई। इसमें जिले के अमृत सरोवरों को उपयोगी एवं जीवंत बनाने के लिए विभागों को आवंटित करने पर विचार विमर्श किया गया।जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि वर्तमान स्थिति के आधार पर अमृत सरोवरों का उनकी उपयोगिता के आधार पर सर्वेक्षण कराया जाए। विभागों से परामर्श करते हुए इसकी बेहतर उपयोगिता के आधार पर संबंधित विभागों को आवंटित की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। परियोजना निदेशक आनंद सिंह ने बताया कि जनपद में 87 अमृत सरोवर बनाए गए है। जिसमें 74 ग्राम्य विकास विभाग और 13 वन विभाग के माध्यम से बनाए गए है। इन अमृत सरोवरों को उपयोगी और जीवंत बनाने के लिए विभागों को आवंटित किया जाना है। ताकि विभाग अपनी योजनाओं से इन अमृत सरोवरों को अधिक उपयोगी बना सके। बैठक में परियोजना निदेशक आनंद सिंह, सहायक निदेशक मत्स्य रितेश चंद सहित वर्चुअल माध्यम से सभी खंड विकास अधिकारी एवं संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

डीएम ने ली स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा' अभियान को सफल बनाए जाने के सम्बन्ध में बैठक

देहरादून। जिलाधिकारी सोनिका ने ऋषिपर्णा सभागार कलेक्ट्रेट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा' अभियान को सफल बनाए जाने के सम्बन्ध में बैठक लेते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

उन्होंने हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने हेतु स्थानीय जनप्रतिनिधियों, नागरिकों, स्कूल, कालेज एवं संगठनों की भागीदारी कराने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिए।जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि तिरंगा यात्रा कार्यक्रम आयोजित कराते हुए स्थानीय जनप्रतिनिधियों, स्कूलों कालेजों एवं संगठनों की सहभागिता बनाने, तिरंगा संगीत कार्यक्रम देशभक्ति से ओतप्रोत गीतों का प्रसारण, तिरंगा श्रद्धांजलि कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं उनके परिवारों की उपस्थिति एवं भागीदारी सुनिश्चित करना। तिरंगा प्रतिज्ञा कार्यक्रम आयोजित करते हुए तिरंगा वेबासाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। मेरी माटी मेरादेश अभियान के तहत् बनाए गए शिलापटों के पास प्रतिज्ञा के कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते है। तिरंगा कैनवास- हरघर तिरंगा कार्यक्रम स्थलों पर तिरंगा कैनवास लगाया जाएगा ताकि लोग स्थानीय लोग स्थानीय भाषा में हर घर तिरंगा या जय हिन्द लिख सकें। कैनवास राष्ट्रीय ध्वज के आकार 2:3 के समान हो सकता है, डिजाईन टैम्पलेट पर उपलब्ध होगा।उन्होंने समस्त उप जिलाधिकारियों एवं समसत विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया 12 से 14 अगस्त 2024 तक ग्रामीण एवं नगर क्षेत्रों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, स्कूलों, कालेजों, संगठनों की सहभागिता ली जाए। उन्होंने नगर क्षेत्रों में नगर निगम , नगर पालिका परिषद तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायती राज विभाग को व्यापक सफाई अभियान चलाने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने समस्त उप जिलाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में तथा सम्बन्धित विभागों को आपसी समन्वय से हरघर तिरंगा कार्यक्रम श्रृंखलाओं का सफल आयोजन के साथ जनमानस की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अभियान को सफल बनाये जाने हेतु कार्यवाही करने के निर्देश दिए।बैठक मुख्य विकास अधिकारी सुश्री झरना कमठान अपर जिलाधिकारी प्रशासन जयभारत सिंह, अपर मुख्य नगर आयुक्त नगर निगम बीर सिंह बुदियाल, नगर मजिस्ट्रेट प्रत्युष सिंह, उप जिलाधिकारी सदर हरिगिरि, उप जिलाधिकारी मुख्यालय शालिनी नेगी, विशेष भूमि अध्याप्ति अधिकारी स्मृता परमार, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ संजय जैन, निदेशक ग्राम्य विकास अभिकरण विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक यातायात मुकेश कुमार, अधि.अभि लोनिवि, जितेन्द्र कुमार, अधि.अभि. सिंचाई दिनेश चन्द्र उनियाल, अधि.अभि. विद्युत गौरव सकलानी सहित सम्बन्धित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
-सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382-222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com